

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

22-अगस्त-2014 11:35 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रपति भवन में आयोजित, आईआईटी बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के अध्यक्षों और निदेशकों के सम्मेलन में दिए गए भाषण का मूल पाठ

मैं राष्ट्रपति जी का बहुत आभारी हूँ कि मुझे आप सबसे मिलने का अवसर मिला और राष्ट्रपति जी का ये इनीशिएटिव है, खास करके शिक्षा क्षेत्र के लिए और मैं देख रहा हूँ कि लगातार वो इस विषय की चिंता भी कर रहे हैं, सबसे बात कर रहे हैं, और बहुत विगिरसली, इस काम के पीछे समय दे रहे हैं। उनका ये प्रयास, उनका मार्गदर्शन आने वाले दिनों के, और आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत ही उपकारक होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। हमारे देश में आईआईटी ने एक प्रतिष्ठा प्राप्त की है। जिस कालखंड में इसका प्रारंभ हुआ, जिन प्रारंभिक लोगों ने इसको जिस रूप में इस्टेबलिश किया, उसकी एक ग्लोबल छवि बनी हुई है, और आज विद्यार्थी जगत में भी, और पेरेंट में भी एक रहता है कि बेटा आईआईटी में एडमिशन ले और एक प्रकार से आप का ब्रांडिंग हो चुका है। अब कोई ब्रांडिंग के लिए आपको ज्यादा कुछ करना पड़े, ऐसी स्थिति नहीं है। लेकिन कभी-कभी संकट लगता है कि इस ब्रांड को बचायें कैसे? और इसके कुछ लिए कुछ पारामीटर्स तय करना चाहिए ताकि कहीं कोई इरोजन न हो और कोशिश यह हो कि ज्यादा अपग्रेडेशन होता रहे।

आपका मैंने एजेंडा आज देखा, जितने विषय अपने सोचे हैं, उतने अगर आप तय करते हैं, तो मुझे नहीं लगता है कि आने वाले दस साल तक आपको कोई नए विचार की जरूरत पड़ेगी या कोई कमियां महसूस होगी, काम के लिए। इतना सारा एजेंडा आपने रखा है आज। ग्लोबल रैंकिंग से लेकर के आईआईटीयन के उपयोग तक की सारी इसकी रेंज है। एक, मुझे ऐसा लगता है कि एक तो हमें ग्लोबल रैंकिंग के लिए जरूर कुछ कर लेना चाहिए क्योंकि आइसोलेटेड वर्ल्ड में हम रह नहीं सकते। लेकिन एक बार हमारे अपने पारामीटर तय करके, देश की अंदरूनी व्यवस्था में हम कोई रैंकिंग की व्यवस्था विकसित कर सकते हैं क्या? वही हमको फिर आगे हमें ग्लोबल रैंकिंग की तरफ ले जाएगा। हमी कुछ पारामीटर तय करें कि हमारी सारी आईआईटी उस पारामीटर से नीचे नहीं होंगी, और इससे ऊपर जाने का जो प्रयास करेगा, उसकी रैंकिंग की व्यवस्था होगी, रेगुलरली उसकी मानिट्रिंग की व्यवस्था होगी। और उसकी जब प्रक्रिया बनती है तो एक कांस्टेंट इनबिल्ट सिस्टम डेवलप कर सकते हैं जो हमें इंप्रूवमेंट की तरफ ले जाता है।

दूसरा एक मुझे विचार आता है कि आईआईटीयन्स होना, ये अपने आप में एक बड़े गर्व की बात है, रिटायरमेंट के बाद भी वह बड़ा गर्व करता है। ये अपने आप में एक बहुत बड़ी ताकत है आईआईटी की, उसका हर स्टूडेंट जीवन के किसी भी काल में आईआईटीयन होने का गर्व करता है। ये बहुत ही बड़ी हमारी पूंजी है। आईआईटी अलूमनी का हम उपयोग क्या करते हैं ? डू यू हैव अवर ऑन रीजन? वो हमारे कैम्पस के लिए कोई आर्थिक मदद करें, कभी आयें, अपने जीवन में बहुत ऊंचाइयां प्राप्त किये हैं तो अपने स्टूडेंट्स को आकर अपने विचार शेयर करें, इंस्पायर करें।

मैं समझता हूँ कि इससे थोड़ा आगे जाना चाहिए। हम अलूमनी पर फोकस करें और उनसे आग्रह करें कि साल में कितने वीक वो हमारे स्टूडेंट्स के लिए देंगे। उनके रुपये-डॉलर से ज्यादा उनका समय बहुत कीमती है। कोई जरूरी नहीं है कि वह जिस आईआईटी से निकला है, वहीं आए। इंटरचेंज होना चाहिए। एक्सपीरियंस शेयर करने का अवसर मिलना चाहिए। यह अपने आपमें बेहतरीन अनुभव है, क्योंकि स्टूडेंट जीवन से बाहर जाने के बाद 20 साल , 25 साल में उन्होंने दुनिया देखी है। कुछ आईआईटीयन्स होंगे जो अपने आप में कुछ करते होंगे, मेरे पास डाटा नहीं है। करते होंगे।

लेकिन, मैंने डाक्टरों को देखा है, दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों में अपना स्थान बनाने के बाद वह डॉक्टर वहां इकट्ठे होकर एक टीम बनाते हैं। एक दूसरे के उपयोगी हों, ऐसी टीम बनाते हैं। टीम बना करके हिन्दुस्तान में आ करके रिमोटस्ट से रिमोट एरिया में वह चले जाते हैं। 15 दिन के लिए कैंप लगाते हैं, मेडिकल चेकअप करते हैं, आपरेशन करते हैं, एक-आध दिन वह स्टूडेंट्स को वो सिखाने के लिए चले जाते हैं। कई ऐसे डाक्टरों की टीम हैं जो ऐसी काम करती है। क्या आईआईटी अलुमनी की ऐसी टीम बन सकती है?

दूसरा मुझे लगता है कि आईआईटी अलुमनी की एक मैपिंग करें, कि हमारे जो पुराने स्टूडेंट्स थे, उनकी आज किस विषय में किसकी क्या कैपिबिलिटी है। हम उनका गुपिंग करें। मान लीजिए कि आज वो कुछ आईआईटी के स्टूडेंट्स दुनिया में कहीं न कहीं हेल्थ सेक्टर में काम कर रहे हैं। हेल्थ सेक्टर से जुड़े हुए आईआईटीयन्स को बुलाकर के उनका नॉलेज जो है,

उनके एक्सपर्टीज जो हैं, हिन्दुस्तान में हेल्थ सेक्टर में वो कैसे कंट्रीब्यूट कर सकते हैं। उनके आईडियाज, उनका समय, उनकी योजनाएं, एक बहुत बड़ी जगह है, जिनको हम जोड़ सकते हैं। उसका हमें प्रयास करना चाहिए।

मुझे लगता है, हर बच्चा आईआईटी में नहीं जा पाएगा और अकेले आईआईटी से देश बन नहीं पाएगा। इस बात को हमें स्वीकार करना होगा। आज आईआईटीज की वो ताकत नहीं है कि रातें-रात हम कैनवास बहुत बड़ा कर दें। फैकल्टी भी नहीं मिलती है। क्या आईआईटीज हमारी, अपने नजदीकी एक या दो कॉलेज को अडॉप्ट कर सकती है ? और वो अपना समय देना, स्टूडेंट्स भेजना, सीनियर स्टूडेंट्स भेजना, प्रोफेसर भेजना, उनको कभी यहां बुलाना, उनकी क्वालिटी इम्प्रूवमेंट में आईआईटी क्या भूमिका निभा सकता है? बड़ी सरलता से किया जा सकता है। अगर हमारे आईआईटियन अपने नजदीक के एक-दो इंजीनियरिंग कॉलेज को ले लें तो हो सकता है कि आज हम 15 होंगे तो हम 30-40 जगह पर अपना एक छोटा-छोटा इम्प्रूवेंट कर सकते हैं। हो सकता है कि वहां से बहुत स्टूडेंट्स होंगे जो किसी न किसी कारण से आईआईटी में एडमिशन नहीं ले पाये होंगे लेकिन उनमें टैलेंट की कमी नहीं होगी। अगर थोड़ा उनको अवसर मिल जाए तो हो सकता है कि वो स्टूडेंट भी देश के काम आ जाएं।

एक बात मैं कई दिनों से अनुभव करता हूं कि हमें ग्लोबल टैलेंट पुल पर सोचना चाहिए। मैं ग्लोबल टैलेंट की बात इसलिए करता हूं कि सब जगह फैकल्टी इज ए इश्यू। सब जगह फैकल्टी मिलती नहीं है। क्या दुनिया में जो लोग इन-इन विषयों को पढ़ाते थे, अब रिटायर हो गये, उन रिटायर लोगों का एक टैलेंट पुल बनाएं और उनके यहां जब विंटर हों, क्योंकि उनके लिए वेदर को झेलना बहुत मुश्किल होता है, उस समय हम उनको ऑफर करें कि आइए इंडिया में तीन महीने, चार महीने रहिए। वी विल गिव यू द बेस्ट वेदर और हमारे बच्चों को पढ़ाइये। वी बिल गिव यू द पैकेज। अगर हम इस प्रकार के एक पूरा टैलेंट पुल ग्लोबल बनाते हैं, और वहां जब विंटर हो, क्योंकि वह जिस एज ग्रुप में हैं, वहां की विंटर उन्हें परेशान करती है। इकोनोमिकली वो इतना साउंड नहीं हैं कि दस नौकर रख पायें घर में। वो सब उन्हें खुद से करना पड़ता है। उनको मिलते नहीं नौकर। वह अगर हिन्दुस्तान आए तो हम अच्छी फेसिलिटी दें और मैं मानता हूं कि उसकी कैपिसिटी है हमारे स्टूडेंट को पढ़ाने की और एक फ्रेश एयर हमें मिलेगी। हम इस ग्लोबल टैलेंट पुल को बना कर के अगर हम लाते हैं। कहीं से शुरू करें, दो, पांच, सात से, आप देखिए धीरे-धीरे-धीरे और नॉट नेसेसरली आईआईटी, और भी इंस्टीट्यूशंस हैं, जिसको इस प्रकार के लोगों की आवश्यकता है। इस पर हम सोच सकते हैं। मैं मानता हूं कि साइंस इज यूनिवर्सल बट टेक्नोलॉजी मस्ट बी लोकल। और यह काम आईआईटियन्स कर सकते हैं।

मैं एक बार नॉर्थ ईस्ट गया, अब नॉर्थ ईस्ट के लोग, कुएं से पानी निकालना है, तो पाइपलाइन का उपयोग नहीं करते हैं, बंबू का उपयोग करते हैं। मतलब उसने, जो भी वैज्ञानिक सोच बनी होगी, बंबू लाइफलॉग चलता है, उसको रिप्लेस भी नहीं करना पड़ता है। उसमें जंग भी नहीं लगती है, ऐसी बहुत सी चीजें हैं। हम आधुनिक विज्ञान के सिद्धांतों को उपलब्ध व्यवस्थाओं के साथ जोड़कर के, हमारे सामान्य जीवन में क्वालिटेटिव चेंज लाने के लिए, हम रिसर्च का काम, प्रोजेक्ट अपने यहां ले सकते हैं क्या ? हम ज्यादा कंट्रीब्यूट कर पाएंगे, ऐसा मुझे लगता है।

आईआईटी में जो बैच आते हैं, उसी वर्ष उसके लिए प्रोजेक्ट तय होने चाहिए। पांच प्रोजेक्ट लें, छह प्रोजेक्ट लें, 10 प्रोजेक्ट लें। 10-10 का ग्रुप बना दें, लाइक माइंडेड। जब वो एजुकेशन पूरा करे, तब तक एक ही प्रोजेक्ट पर काम करे। मैं मानता हूं, वे पढ़ते ही पढ़ते ही देश को काफी कुछ कंट्रीब्यूट कर के जाएंगे। मान लीजिए, किसी ने ले लिया रूरल टॉयलेट। रूरल टॉयलेट करना है तो क्या होगा, पानी नहीं है, क्या व्यवस्था करेंगे। किस प्रकार के डिजाइन होंगे, कैसे काम करेंगे, वो अपना पढ़ाई पूरी करते-करते इतने इन्वोल्वमेंट के साथ वो देगा, कॉस्ट इफेक्टिव कैसे हो, यूटिलिटी वाइज अच्छा कैसे हो, मल्टीपल यूटिलिटी में उसका बेस्ट उपयोग कैसे होगा, सारी चीजें वह सोचना शुरू कर देगा। लेकिन हम प्रारंभ में ही तय करें कि 25 प्रोजेक्ट है, यू विल सलेक्ट, उसका एक एक ग्रुप बन जाए। वह अपना काम करते रहें। मैं समझता हूं कि हर बैच जाते समय देश को 5-10 चीजें देकर जाएंगे। जो बाद में, हो सकता है कि एक इनक्यूबेशन सेंटर की जरूरत पड़ेगी, हो सकता है कि एक कर्मशियल मॉडल की जरूरत पड़ेगी, यह तो एक्सटेंशन उसका आगे बढ़ सकता है। लेकिन यह परमानेंट कंट्रीब्यूशन होगा।

दूसरा ये होगा कि जो बाइ इन लार्ज आज कैरिअर ओरिएंटेड जीवन हो चुका है और कैरिअर का आधार भी डॉलर और पाउंड के तराजू पर तौला जाता है, सटिसफेक्शन लेवल के साथ जुड़ा हुआ नहीं है, ईट इज ट्रेजेडी ऑफ द कंट्री। लेकिन ये अगर करेगा, तो उसके मन में जॉब से भी बढ़कर, कैरिअर से भी बढ़कर, एक सटिसफेक्शन लेवल की एक रुचि बनेगी। उसका एक मॉडलिंग होगा। हम उस पर यदि कुछ बल देते हैं तो करना चाहिए। मैंने 15 अगस्त को एक बात कही थी, जो प्राइवेट में काम करता है, तो कहते हैं, जॉब करता है, सरकार में जो काम करता है सर्विस करता है। यह जॉब कल्चर से सर्विस कल्चर से लाने का एनवायरमेंट हम आईआईटी में बनाएं। देश के लिए कुछ तो करना चाहिए। आज देखिए, डिफेंस सेक्टर, इतना अरबों-खरबों रुपये का हम इंपोर्ट करते हैं। मैं नहीं मानता है कि हमारे देश के पास ऐसे टैलेंट नहीं हैं, जो यह न बना पाएं। अश्रु गैस, बाहर से इमपोर्ट करते हैं, क्या हम नहीं बना सकते ? यू विल बी सरप्राइज, हमारी जो केरेंसी है, केरेंसी की

इंक हम इंपोर्ट करते हैं और छापते हैं हम गांधी जी की तस्वीर।

यह चैलेंज क्यों न उठाएं हम, क्यों न उठाएं ? मैं मानता हूँ कि एक-एक चीज को उठाकर के हम अब उसके लिए कोई एक व्यक्ति बनाएं, आप खुद सोच लें तो सैकड़ों चीज हो जाएं, मान लीजिए डिफेंस में हैं, हो सकता है कि हम कम पड़ जाते हैं। बहुत बड़ी चीजें रिसर्च करके हम नहीं दे पाते हैं। हेल्थ सेक्टर में ले लीजिए, एक थर्मामीटर भी हम बाहर से इमपोर्ट करते हैं।

हेल्थ आज टोटली टेक्नोलॉजी आधारित हो गई है। अन्य का रोल 10 परसेंट है, तो 90 परसेंट रोल टेक्नोलॉजी का है। अगर टेक्नोलॉजी का रोल हेल्थ सेक्टर को रिप्लेस कर रही है तो वाट इज अवर इनिशिएटिव? मैं जब गुजरात में जब था, तो एक डॉक्टर को जानता था, जिन्होंने हार्ट के लिए स्टेंट बनाया था, इंजीनियरिंग के स्टूडेंट को लेकर के। मार्केट में स्टेंट की जो कीमत थी, उसके मुकाबले उसने जो स्टेंट बनाया था उसकी 10 परसेंट कीमत थी और फूल प्रूफ हो चुका है, 10 साल हो गए हैं, देयर इज नो कम्पलेंट एट ऑल। एक डॉक्टर ने अपने प्रोफेशन के साथ-साथ हार्ट के लिए स्टेंट बनाया - हि इज हार्ट सर्जन, लेकिन इस काम को किया, अपने आइडियाज से इंजीनियरिंग फील्ड के लोगों को बुलाया। एंड ही इज ट्राइंग हिज लेवल बेस्ट कि हमारा इंटरफेस हो सकता है क्या ? मेडिकल फैकल्टी एंड आईआईटीयन्स और स्पेशियली इक्विपमेंट मैन्यूफैक्चरिंग में भारत को हेल्थ सेक्टर के लिए अपनी बनाई हुई चीजें क्यों न मिले ? इस चैलेंज को मैं समझता हूँ, हमारे आईआईटीयन्स उठा सकते हैं।

आज भी हमारे देश में लाखों लोगों के पास छत नहीं है, रहने के लिए। हमारी कल्पना है कि भारत जब आजादी के 75 साल मनाए तो कम से कम देश में बिना छत के कोई परिवार न हो। क्या यह काम करना है तो बहुत गति से मकानों का निर्माण कैसे हो ? जो मकान बनें वे सस्टेन करने की दृष्टि से बहुत अच्छा बनें। मैटेरियल भी बेस्ट से बेस्ट उपयोग करने की आदत कैसे बने, इन सारी चीजों को लेकर के, क्या आईआईटी की तरफ से मॉडल आ सकते हैं क्या। डिजाइंस आ सकते हैं क्या? मैटेरियल, उसका स्ट्रक्चर, सारी चीजें आ सकती हैं। हम समस्याओं को खोजने का प्रयास करें।

दुनिया में जैसे हम आईआईटी के लिए गर्व कर सकते हैं, भारत एक बात पर गर्व कर सकता है, लेकिन पता नहीं कि हमने उसको पढ़ें के पीछे डालकर रखा हुआ है। और वे हैं हमारी रेलवे। हम दुनिया के सामने अकेले हमारे रेलवे की ब्रांडिंग एवं मार्केटिंग कर सकते हैं। अकेला इतना बड़ा नाम है, इतना बड़ा नेटवर्क, इतना डेली लोगों का आना-जाना, इतने टेलेंट का, मैं मानता हूँ कि सामान्य से सामान्य व्यक्ति से हाईली क्वालिफाईड इंसान, सबका सिंक्रोनाइज एक्टिविटी है। लेकिन हमने उस रूप में देखा नहीं है। इसी रेलवे को अति आधुनिक, एक्जिस्टिंग व्यवस्था को, बुलट ट्रेन वगैरह तो जब होगी, तब होगी लेकिन एक्जिस्टिंग व्यवस्था यूजर फ्रेंडली कैसे बनें, सारी व्यवस्था को हम विकसित कैसे करें, टेक्नोलॉजी इनपुट कैसे दें, उन्हीं व्यवस्थाओं को कैसे हम बढ़ाएं ?

छोटी-छोटी चीजें हैं, हम बदलाव कर सकते हैं। आज हमारा रेलवे ट्रैक पर जो डिब्बा होता है, 16 टन का होता है। उसका अपना ही बियरिंग कैपिसिटी है। क्या आईआईटीयन उसको छह टन का बना सकते हैं? फिर भी सेफ्टी हो आप कल्पना करके बता सकते हैं, कैपेसिटी कितनी बढ़ जाएगी। नई रेल की बजाए इसकी कैपेसिटी बढ़ जाएगी। मेरे कहने का तात्पर्य है कि हम भारत की आवश्यकताओं को सिर्फ किताबी बात नहीं आईआईटी से निकलने वाला और समाज को एक साथ कुछ न कुछ देकर जाएगा। इस विश्वास के साथ हम कुछ कर सकते हैं।

मैं मानता हूँ कि हमारे देश में दो चीजों पर हम कैसे बढ़ रहे हैं और जो सामान्य मानविकी जीवन में भी है, एक साइंस ऑफ थिंकिंग और एक आर्ट ऑफ लिविंग। यह कम्बीनेशन देखिए, इवन आईआईटी के स्टूडेंट को भी पूछना, प्रवोक करना है।

एक घटना सुनिए, बड़ी घटना है। एक साइंटिस्ट एक यूनिवर्सिटी में गए। स्टूडेंट्स भी बड़े उनसे अभिभूत थे, बहुत ही ओवर क्राउडेड रूम हो गया था। उन्होंने पूछा, भाई, हमें अगर आगे बढ़ना है, तो आब्जर्ब करने की आदत बढ़ाना चाहिए। तो समझा रहे थे, हम देखते हैं, लेकिन आब्जर्ब नहीं करते और साइंटिफिक टेंपर वहीं से आता है। तो उसने कहा कि ऐसा करो भाई, एक टेस्ट ट्यूब लेकर के कोई नौजवान बाथरूम में जाओ, और उसमें अपना यूरिन ले कर के आओ। उन्होंने एक स्टूडेंट को भेजा, वह बाथरूम गया, टेस्ट ट्यूब में यूरिन ले कर आया। यूरिन लिया। यूरिन में अपनी अंगुली डाली, और फिर मुंह में डाली। सारे स्टूडेंट्स परेशान, यह कैसा साइंटिस्ट है, दूसरे का यूरिन अपने मुंह में डालता है। हरेक के मुंह से - हैं ए ए ए - बड़ा निगेटिव आवाज निकली। फिर ये हंस पड़े। बोलो, आपको अच्छा नहीं लगा ना। क्यों, क्योंकि आपने आब्जर्ब नहीं किया। आपने सिर्फ देखा। मैंने टेस्ट ट्यूब में ये अंगुली डाली थी, और मुंह में ये (दूसरी अंगुली) लगाई थी। बोलो, अगर आप आब्जर्ब करने की आदत नहीं डालते हैं, सिर्फ देखते हैं, तो आप शायद उस साइंटिफिक टेंपर को इवाल्व नहीं कर सकते हैं, अपने आप में। मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि इन चीजों को कैसे करें। और एक विषय है, आखिर में

अपनी बात समाप्त करूंगा।

हमारे देश में बहुत से लोग होते हैं, जो स्कूल-कॉलेज कहीं नहीं गए, पर बहुत चीजें नई वो इनोवेट करते हैं। बहुत चीजें बनाते हैं। क्या हम, जिस इलाके में हमारे आईआईटी हों, कम से कम उस इलाके के 800-1000 गावों में ऐसे लोग हैं क्या? किसान भी अपने तरीके से व्यवस्था को नया डाइमेंशन दे देता है। थोड़ा सा मोडिफाई कर देता है। कभी हमारे स्टूडेंट्स को प्रोजेक्ट्स देना चाहिए, यदि हमारे किसान ने यह काम कर दिया है, तो तुम इसे साइंटिफिकली परफेक्ट कैसे कर सकते हो, फुलप्रुफ कैसे विकसित कर सकते हो ? क्योंकि बड़ी खोज की शुरुआत, एक स्पार्क से होती है। यह स्पार्क कोई न कोई प्रोवाइड करता है। हम अगर उनको एक प्रोजेक्ट दें, हर आईआईटी को ऐसे 25 लोगों को ढूढ़ना है जो अपने तरीके से जीवन में कुछ न कुछ करते हैं, कुछ न कुछ कर दिया है। उन 25 को कभी बुलाइए, उनके एक्सपीरियेंस स्टूडेंट्स के साथ शेयर कीजिए। वह पढ़ा लिखा नहीं है, उनको भाषा भी नहीं आती है। लेकिन वो उनको नई प्रेरणा देगा।

अहमबदाबाद आईआईएम में मिस्टर अनिल गुप्ता इस दिशा में कुछ न कुछ करते रहते हैं। लेकिन यह बहुत बड़ी मात्रा में आईआईटी स्टूडेंट के द्वारा किया जा सकता है। ऐसी बहुत सी बातें हैं, जिसको लेकर के बात समझता हूं, हम करें तो माने एक अलग डाइमेंशन पर ही अपनी बातें रखने का प्रयास किया है। लेकिन कई दिशाओं पर आप चर्चा करने वाले हैं। और मुझे विश्वास है, आईआईटी ने इस देश को बहुत कुछ दिया है, और बहुत कुछ देने की क्षमता भी है। सिर्फ उसको उपयोग में कैसे लायें, इस दिशा में प्रयास करें।

मैं फिर से एक बार राष्ट्रपति जी का हृदय से अभिनंदन करता हूं, आभार व्यक्त करता हूं कि इस प्रकार का अवसर मिला।

थैंक्यू।

महिमा वशिष्ट/शिशिर चौरसिया

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

05-सितम्बर-2014 11:35 IST

“शिक्षक दिवस” पर बच्चों के साथ संवाद के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दी गयी समापन टिप्पणी का मूल पाठ

सारे देश भर के मेरे बाल मित्रों, मुझे अच्छा लगा। विविध प्रकार के सवालों का मुझे सामना करना पड़ा। मुझे जवाब देने पड़े। लेकिन कुछ सवाल ऐसे थे, मुझे लगता है कि कहीं, मुझे डर लगता है, आपके भीतर का बालक मुरझा तो नहीं गया है। बालक के सवाल, बालक जैसे होने चाहिए। हमारे भीतर के बालक को कभी मुरझाने मत दीजिए। भीतर के बालक के जिंदा रखना चाहिए। वह आपको जिंदा रखता है और इसलिए हंसते खेलते रहिये।

यह उमर ऐसी है बच्चों, जिसमें बहुत कुछ नया जानना है, समझना है। हिम्मत होती है। छोटा बालक, दीवार पर चढ़ता है तो, डरता नहीं है। चढ़ना है तो, चढ़ना है। कोशिश करता है। वही तो बालकपन की ताकत होती है। वो जितना आप जी पाएंगे, जिंदगी जीने की बहुत अच्छा अवसर, आपके जीवन से जुड़ जाएगा और इसलिए हम इसके लिए प्रयास करें।

आज डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को हम श्रद्धांजलि देते हैं, नमन करते हैं और हमारे सभी शिक्षकों के प्रति हम आदर व्यक्त करते हैं और आदर ऐसा नहीं, हमेशा मैं कभी स्कूलों में जाता था। लेक्चर लेक्चर देने जाता था, मुझे और कोई काम-धाम नहीं, मैं यही करता रहता था। तो स्कूल में कभी पूछता था। मैं कहता था भाई, साल में अब तक कितने बालकों को पढ़ाया होगा। तो टीचर कहता था, मैं दस साल से नौकरी कर रहा हूँ, मेरे हाथ के नीचे से 500 स्टूडेंट पढ़ कर गए हैं, कोई कहता था 700 स्टूडेंट्स पढ़ कर के गए हैं। मैं पूछता था, इन 500 स्टूडेंट आपसे पढ़ कर के गए, 700 पढ़ के गए, उनकी शादी हो गई क्या? बोले हां, काफियों की हो गई। वैसे आपको शादी में कितने ने बुलाया होगा? मैं हैरान था, मुश्किल से एक या दो स्टूडेंट ऐसे थे, जिन्होंने अपने टीचर्स को शादी में बुलाया था। मतलब, कितना कट ऑफ है। टीचर का हाथ हमारे जीवन को कभी हटना नहीं चाहिए। कभी हटना नहीं चाहिए। उनके जीवन का कोई भी शुभ अवसर हो, उसको जैसे अपने रिश्तेदारों को बुलाने की इच्छा हो, वैसे ही उसको सबसे पहले अपने टीचर को बुलाने की इच्छा होनी चाहिए। ये नाता, ये नाता बनना चाहिए।

यहां कई टीचर आज मुझे सुन रहे होंगे, उनके मन में भी सवाल उठेगा। हां, यार, इतने विद्यार्थी पढ़ के गए, कोई मुझे पूछता ही नहीं है वो कौन सा रिश्ता था, क्या कमी थी, उस कमी को भरना, यह अपनापन लाना होगा और उसके जीवन में कोई विकास हो तो उसका मन करे। अमरीका पढ़ने चला गया होगा, अमरीका में बहुत बड़ी अच्छी नौकरी करता होगा। वो भी कभी एक चिट्ठी लिखे, सर मैं आपका एक स्टूडेंट हूँ। मैंने अमेरिका में ये पोजिशन पाई है, मैं आपको बता कर के आनंदित होता हूँ, इसलिए मैं आपको चिट्ठी लिख रहा हूँ। कितने टीचर को चिट्ठी आती होगी, शायद किसी को। अपना स्टूडेंट प्रगति करे, जब उसके टीचर को बताने का उसका मन करे, ऐसी छवि ऐसे फुटस्टेप्स, बालक के जीवन में रहे, यह अगर टीचर करता है, टीचर और बालक का नाता इस प्रकार का बनता है, तो मैं नहीं मानता हूँ कि व्यवस्थाएं, कभी रूकावट बनेगी, इंफ्रास्ट्रक्चर कभी रूकावट बनेगा, जिंदगी बदलने के लिए। ये अपने आप में काफी होगा।

एक माली पढ़ा लिखा नहीं होता है, जिस बगीचे में काम करता है, वहां जो खाद डाला जाता है, उसकी दुर्गंध होती है लेकिन, उसके अंदर सामर्थ्य रहता है कि भगवान को भी पसंद आए, ऐसे फूलों को वो सर्जन कर देता है, एक अनपढ़ माली भी ऐसा कर सकता है तो, हमारे पास तो कितने फूल परमात्मा ने दिए हैं। उन फूलों को हम कैसे संवारे, उन फूलों को भारत मां के गले में कैसे अर्पित करें, ये अगर सपना हम टीचरों का रहेगा तो, मैं मानता हूँ कि देश और दुनिया को यह देश बहुत कुछ दे सकता है। डॉक्टर राधाकृष्णन जी के जीवन से हम यही प्रेरणा लें और हम भी कुछ करें।

आप सबसे मिलने का अवसर मिला, देशभर के बालकों से बातचीत करने का अवसर मिला, मेरे लिए यह सबसे संतोष का काम है। मैं जब गुजरात में मुख्यमंत्री था तो बच्चों को स्कूल ले जाने का कार्यक्रम करता था। फर्स्ट डे जब स्कूल ओपनिंग होती थी तो मैं खुद गांव में जाता था। जहां एजुकेशन न हो, और वहां तो उस समय 45 टेम्परेचर रहता है, जून महीने में 45 टेम्परेचर में मैं गांव जाता था। घर घर जाकर बच्चों को स्कूल ले जाता था।

मैंने एक बार कहा था भाषण में, मैंने कहा था कि मुख्यमंत्री के नाते शपथ समारोह का मुझे जो आनंद आता था, उससे ज्यादा आनंद उस गांव के गरीब की बेटी को हमें स्कूल में दाखिल करते हुए आता है। ये मेरा मिज़ाज है। इस मिज़ाज को

ले करके मुझे आगे बढ़ना है।

बहुत बहुत शुभकामनाएं, बहुत बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

धीरज सिंह/ अमित कुमार / महेश राठी/ शिशिर चौरसिया/ तारा /लक्ष्मी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

05-सितम्बर-2014 11:13 IST

"शिक्षक दिवस" के अवसर पर, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा बच्चों के संवाद के दौरान हुये प्रश्न-उत्तर सत्र का मूल पाठ

प्रश्न:1 : सर, जब आप प्रधानमंत्री बने तो गांधी नगर से दिल्ली आने पर आपको कैसा महसूस हुआ?

प्रधानमंत्री जी: फर्क तो बहुत लग रहा है, मुझे समय नहीं लगा अभी दिल्ली देखने का। ऑफिस से घर, घर से ऑफिस यही मेरा काम चल रहा है। लेकिन मैं समझता हूं आप पूछना क्या चाहते हैं। वैसे कोई बड़ा फर्क मैं महसूस नहीं करता हूं। मुख्यमंत्री के कार्य में और प्रधानमंत्री के कार्य में विषय वस्तु बदलते होंगे दायरा बदलता होगा जिम्मेदारियां जरा ज्यादा बढ़ती होंगी। लेकिन व्यक्ति के जीवन में कोई ज्यादा फर्क नहीं आता हैं, उतनी ही मेहनत करनी पड़ती शायद थोड़ी ज्यादा करनी पड़ती है, उतना ही जल्दी उठना पड़ता है, देर रात तक काम करना पड़ता है। राज्य में थे तो एक आध शब्द इधर-उधर हो जाये तो ज्यादा टेंशन नहीं रहता था। यहां रहता है कि कही देश का नुकसान ना हो जाये, कोई ऐसी बात ना हो जाये कि देश का नुकसान ना हो जाए। तो थोड़ा ज्यादा ही कॉन्शियस रहना पड़ता है। लेकिन मैं इतना ही कह सकता हूं कि मुख्यमंत्री कार्य का अनुभव होने के कारण इस दायित्व को संभालने में, समझने में और अफसरों के साथ काम लेने में मुझे कोई ज्यादा दिक्कत नहीं आई, बहुत सरलता से मैं इसे कर पाया पर आगे देखेंगे कोई ऐसा बदलाव आया तो।

प्रश्न:2 : सर, मैं आपसे यह प्रश्न करना चाहती हूं कि आपके जीवन में किसका सबसे अधिक योगदान रहा है? आपके अनुभवों का या आपके शिक्षकों का?

प्रधानमंत्री जी : ये बड़ा ट्रिकी सवाल है। क्योंकि हमें पढ़ाया जाता है कि अनुभव ही सबसे बड़ा शिक्षक है। लेकिन मैं उसको जरा अलग तरीके से समझाता हूं कि अगर आपको सही शिक्षा नहीं मिली है तो अनुभव भी आपको बर्बाद करने का कारण भी बन सकता है या आगे बढ़ने का अवसर भी बन सकता है अभी इसलिए अनुभव उत्तम शिक्षक है। यह स्वीकारने के बाद भी मैं यह मानता हूं आपकी शिक्षाओं, संस्कार उस पर डिपेंड करेगा कि आपका अनुभव कैसे काम आता है। जैसे, मान लीजिए कोई पिक पोकेटर, आप बस में जा रहे हो और जेब काट लिया और पैसे ले गया, ये आपका अनुभव होगा। अगर आपकी शिक्षा सही नहीं है संस्कार सही नहीं है आपको विचार ये आयेगा कि अच्छा बिना मेहनत वह तो रुपया कमा लिया चलिए मैं भी उस रास्ते पर चल पड़ूं, अगर आपकी शिक्षा अच्छी है, संस्कार अच्छी है, सोच अच्छी है तो विचार आयेगा कि मैं अलर्ट नहीं रहा, मैंने सही ठिकाने पर पैसे रखे नहीं थे, मुझे जितना जागृत रहना चाहिए था नहीं रख रहा था और उसके कारण मेरे पैसे चले गये तो वो एक ही चीज़ से दो अनुभव लिये जा सकते हैं लेकिन, अनुभव लेने का आधार वो बनता है कि आपकी शिक्षा कैसी हुई है और इसीलिए मेरे जीवन में शिक्षा का भी, शिक्षकों का भी संस्कार का उतना ही महत्व रहा है जितना मैं अनुभव में से अच्छी-अच्छी चीजें पकड़ने लग गया। तो मेरे लिए दोनों का उपयोग है।

प्रश्न:3 : सर, क्या आपने एक बालक के तौर पर सोचा है कि आप भारत में एक दिन प्रधानमंत्री बनेंगे? क्या आपने कभी सोचा है कि आप विश्व भर में प्रसिद्ध होंगे?

प्रधानमंत्री जी : मैंने कभी नहीं सोचा। क्योंकि मेरा जो बैकग्राउंड है, मैं बहुत सामान्य परिवार से हूं। और मैं तो कभी स्कूल में मॉनिटर का चुनाव भी नहीं लड़ा था। तो ऐसा तो सोचने का सवाल ही नहीं उठता था और ना ही और दूसरा धीरे-धीरे जो मैंने पढ़ा है और अपने बड़ों से सुना है उससे मुझे लगता है कि कभी-कभी इस प्रकार की महत्वाकांक्षाएं बहुत बड़ा बोझ बन जाती हैं, संकट बन जाती हैं और इसीलिए मैंने देखा कि ज्यादातर लोग दुखी रहते हैं, इस बात के लिए कि उन्होंने कुछ बनने के सपने देखे होते हैं। सपने देखने चाहिए लेकिन कुछ बनने के बजाए कुछ करने के सपने देखने चाहिए। कभी क्या होता है कि हम छोटे होते हैं तो हमारे मम्मी-पापा क्या करते हैं, सबको परिचय करवाते हैं, ये बेटा हैं ना, उसको डाक्टर बनाना है, ये बेटा है, इसको इंजीनियर बनाना है, तो दिमाग में बचपन से ही घुस जाता है कि मुझे डाक्टर बनना है और मुझे इंजीनियर बनना है और दसवीं-बाहरवीं में आते-आते गाड़ी लुढ़क जाती है। फिर कहीं एडमिशन मिलता नहीं। तो फिर कहीं नौकरी कर लेता है, कहीं टीचर बन जाता है, कहीं कुछ बन जाता तो जीवनभर गाली देता है, अपने आपको

देखिए डाक्टर बनना था, टीचर बन गया, डाक्टर बनना था, क्लर्क बन गया, डाक्टर बनना था, ड्राइवर बन वो जिन्दगी भर रोता रहता है, जो बना है उसका आनन्द भी नहीं लेता है। इसलिए कुछ करने के सपने देखें और थोड़ा बहुत भी कर ले तो जीवन को इतना संतोष मिलता है, इतनी प्रेरणा मिलती है, इतना आनन्द मिलता है और अधिक कुछ करने की ताकत भी मिलती है और मेरा आग्रह रहेगा सभी बाल मित्रों से कि करने के सपने जरूर देखिए कि मैं इतना कर लूंगा, ये कर लूंगा, करते-करते कुछ बन गये तो बन गये नहीं बने तो नहीं बने। करने का आनन्द बहुत रहेगा और इसीलिए मेरे जीवन में ये बात बहुत काम आयी है।

प्रश्न:4 : छात्रों से बातचीत से क्या लाभ मिलता है?

प्रधानमंत्री जी : लाभ मिलता होता, तो मैं नहीं आता। क्योंकि वो लोग ज्यादा मुसीबत में होते हैं, जो लाभ के लिए काम करते हैं। बहुत सारे काम होते हैं, जो लाभ के लिए नहीं करना चाहिए। जो लाभ के लिए नहीं करते हैं तो उसका आनंद अलग होता है। मैं आज, मैं देश के टीवी वालों का आभारी हूं। बहुत अच्छा काम किया उन्होंने। मुझे समय नहीं मिला, लेकिन थोड़ा-बहुत मैंने देखा। उन्होंने अलग-अलग जगह पर बालकों से पूछा - बताओ भाई प्रधानमंत्री से क्या पूछना चाहते हो, क्या बात करना चाहते हो। शायद, बालकों को अपनी बात बताने का ऐसा अवसर इससे पहले कभी नहीं मिला होगा। इसलिए मैं इस टीवी मीडिया वालों का बहुत आभार व्यक्त करता हूं, उन्होंने बहुत उत्तम काम किया। सब, बहुत सारे बालक, बहुत सारी बातें आज टीवी पर बता रहे हैं। पहली बार आज देख रहा हूं, पूरा दिन आज टीवी हमारे देश के इन बाल मित्रों ने occupy कर लिया है। यह अच्छा है और मैं मानता हूं, यही मुझे सबसे बड़ा लाभ हुआ है। वरना देश हमारे चेहरे देखे-देख के थक गया है जी। आप लोगों के चेहरे देखता है तो पूरा देश खिल उठता है। आपकी बातें सुनता है तो, मुझे भी बालकों की बातें सुनने में इतना आनंद आ रहा था, वाह हमारे देश के बच्चे कितना बढ़िया सोचते हैं। आप लोगों से मिल करके मुझे अनुभूति होती है। मुझे मिलता है। वो बैटरी चार्ज होता है ना वैसे मेरी भी बैटरी चार्ज हो जाती है।

प्रश्न:5 : People say than you are like a Headmaster. But you appeared to us friendly, sweetly and a kind person sir my question is that what kind of person, are you in real life?

प्रधानमंत्री जी : मैं छोटी घटना बताता हूं। मैं छोटा था तो जैसे आप लोगों को, जैसे आज बालकों ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन पर भाषण किया ना, तो मुझे भी बोलने का शौक था और बहुत छोटी आयु में लोग मुझे बोलने के लिए बुलाते थे। एक बार एक गांव में रोटरी क्लब का एक फंक्शन था। तो रोटरी वालों ने मुझे बुलाया। अब उनका प्रोटोकाल होगा। छोटा नगर था, करीब 30,000 की बस्ती का नगर होगा। फिर उन्होंने मुझे लिखा कि आप अपना बायोडाटा भेजिए। तो हमारे पास तो कुछ था ही नहीं बायोडाटा। हम क्या भेजें? उस कार्यक्रम में एक और सज्जन थे जो उस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे और शायद वह डोनेशन भी देते होंगे, तो शायद उनको बुलाया होगा उन्होंने। उनको भी कहा होगा कि आपका बायोडाटा भेजिए। हम जब कार्यक्रम में गए तो उनका बायोडाटा कोई 10 पेज का था। वो पूरा वहां पढ़ा गया। बड़ा विस्तार से जनवरी में क्या किया था, फरवरी में क्या किया था और मार्च में क्या किया था। लेकिन जब उनका भाषण हुआ तो 3 मिनट का हुआ। वो भी शायद वो 2 पैराग्राफ लिख के लाए थे और पढ़ा उन्होंने। मुझे जब पूछा गया था कि आपका बायोडाटा भेजिए तो मैंने जवाब लिखा था। मैंने लिखा था कि हर कोई इंसान, हमारे शास्त्र कहते हैं कि मैं कौन हूं। इसका जवाब खोज रहा है, किसी को पता नहीं वह कौन है, और को पता होता है, वह कौन है ? जिस पल इंसान जान लेता है कि मैं कौन हूं, फिर उसके जीवन के हर काम समाप्त हो जाते हैं। संतोष मिल जाता है और मैंने लिखा है कि मैं खुद को पहचान नहीं पाया, जान नहीं पाया कि मैं कौन हूं। ऐसा मैंने जवाब लिखा था। तो मैंने कहा मैं, मेरे विषय में आपको क्या लिखूं। ऐसा मैंने लिखा था। खैर उन्होंने मेरा वही बायोडाटा पढ़ लिया था। तो बेटे तुमने जो पूछ लिया है, आप क्या हो? अब मैं खुद तय नहीं कर सकता हूं कि मैं क्या हूं। लेकिन जो आपने कहा कि मैं हेडमास्टर की तरह काम करता हूं, मैं मालूम नहीं, तुम्हारे हेडमास्टर यहां आए हैं। क्या स्कूल के (यस सर) तो तुम्हारा क्या होगा बताओ? वो कल तुम्हें पूछेंगे। तुम्हारे हेडमास्टर कैसे है? मुझे बताइए?

लेकिन तुम मुझे हेडमास्टर के रूप में पूछ रही हो या कुछ और ? देखिए मैं task master तो हूं। मैं काम भी बहुत करता हूं और खूब काम लेता भी हूं। और समय पर काम हो, इसका आग्रही भी हूं। और शायद मैं इतना डिसीप्लीन्ड नहीं होता, और मैंने शायद खुद से ही इतना ही काम लिया है। ऐसा नहीं कि मैं अपने लिए तो सब रिलेक्सेशन रखता हूं और औरों के लिए सारे बंधन डालता हूं, ऐसा नहीं है और इसलिए मैं 15 अगस्त को सार्वजनिक रूप से सरकारी अफसरों को कहा था कि अगर आप 11 घंटे काम करेंगे तो मैं 12 घंटे काम करने को तैयार हूं। तो उस रूप में मैं काम करता हूं। बाकी मैं नहीं जानता, तुम्हारे स्कूल के जो हेडमास्टर हैं, वह अच्छे हैं और मुझे उस रूप में देखती हो तो I thank you for this.

प्रश्न:6 : How can I become the Prime Minister of India?

प्रधानमंत्री जी : 2024 का चुनाव लड़ने की तैयारी करो और इसका मतलब यह हुआ कि तब तक मुझे कोई खतरा नहीं है। देखिए भारत एक लोकतांत्रिक देश है और हमारे संविधान निर्माताओं ने हमें इतनी बड़ी सौगात दी है कि हिन्दुस्तान की जनता का आप विश्वास जीत लेते हैं देश की जनता का प्रेम संपादन कर सकते हैं, तो हिन्दुस्तान का कोई भी बालक इस जगह पर पहुंच सकता है। मेरी आपको बहुत शुभकामनाएं हैं और अब आपकी प्रधानमंत्री पद की शपथ हो तो मुझे शपथ समारोह में जरूर बुलाना।

प्रश्न:7 : अभी-अभी आप जापान गये और आपने वहां एक विद्यालय को भी देखा सर आपके हमारे यहां और जापान की शिक्षा में क्या अंतर नज़र आया ?

प्रधानमंत्री जी : मैं इस बार जापान गया तो मैंने सामने से यह कहा था कि वहां कि शिक्षा प्रणाली को जरा समझना चाहता हूं, मैं देखना चाहता हूं। वहां मैं एक प्राइमरी स्कूल में भी गया था और वहां मैं एक वीमेन्स यूनिवर्सिटी में भी गया था। प्राइमरी स्कूल में जाकर मेरी कोशिश यह थी कि उसकी शिक्षा प्रणाली को समझना उनके यहां टीचिंग ना के बराबर है। आपको लगता होगा कि ऐसी कैसी स्कूल जहां टीचिंग ही नहीं है लेकिन वहां हन्ड्रेड पर्सेंट लर्निंग है। वहां की सारी कार्य शैली ऐसे है कि बालक को सीखने का अवसर मिलता है और खुद उसमें कुछ ना कुछ करता है। वो पार्ट ऑफ द प्रोसेस होता है और ये उनका बड़ा आग्रह है और दूसरा मैंने देखा कि हर बालक गजब की डिसिप्लिन्ड है। मां-बाप स्कूल छोड़ने नहीं आते थे। नियम है कि मां-बाप स्कूल छोड़ने नहीं आयेंगे। पद्धति ये है कि हर 25 कदम पर पेरेन्ट्स खड़े रहते हैं और उस यूनिफार्म वाले बालक वहां से निकलते हैं तो एक पेरेन्ट उस बालक को 25 कदम दूसरे पेरेन्ट की निगरानी में हेन्डओवर करते हैं। इसके कारण क्या हुआ है कि सभी पेरेन्ट्स सब बच्चों के साथ समान ट्रीटमेंट देते हैं। अपने ही बच्चों को सम्भाल कर लाना, बढिया गाड़ी में लाकर छोड़ देना, ऐसा नहीं है, हरेक बच्चों को अपने स्कूल पैदल जाते समय पेरेन्ट्स उनको देखते हैं। ये तो मां-बाप का सभी बच्चों के प्रति एक समान भाव का संस्कार की बड़ी गजब व्यवस्था, मेरे मन को छू गई है। तो ऐसी-ऐसी बहुत चीजें मैंने आब्जर्व की हैं। मुझे काफी अच्छी लगी है, टेक्नोलॉजी का भरपूर उपयोग हो रहा है, छोटे-छोटे बालक भी टेक्नोलॉजी क माध्यम से चीजों को जानने समझने की कोशिश करते हैं। दो चीजों पर ज्यादा मैंने देखा है कि साइन्टिफिक टेम्परेमेंट, इस पर उनका काफी यानि व्यवस्था ही ऐसी है कि इस प्रकार से सोचता है डिसिप्लिन बहुत सहज है, स्वच्छता भाव बहुत सहज है और आदर करना, वो थोड़े झुकते हैं आदर करने के लिए जैसे हम नमस्ते करते हैं। बड़ा फर्क, ऐसे हरेक के व्यवहार में नज़र आता है, तो यह संस्कारों के कारण होता है। तो हमारे में और उनमें तो काफी बड़ा फर्क नज़र आया मुझे।

प्रश्न:8 : If you are a teacher, whom you would concentrate on, an intelligent student, who is lazy or an average student, who is very hard working?

प्रधानमंत्री जी : बड़ा टेढ़ा सवाल है। उसने पूछा, अगर आप शिक्षक होते तो कैसे विद्यार्थी आपको पसंद आते। बहुत बुद्धिमान, आलसी, कैसे?

सचमुच मैं अगर टीचर के रूप में मैं देखूं, तो कोई डिस्क्रिमिनेशन नहीं होना चाहिए। सभी बालक, अगर 30 बालकों का क्लास है, तीसों को अपना मानना चाहिए। और टीचर का काम ये है कि उसके अंदर, हरेक व्यक्ति में, हरेक व्यक्ति में कोई न कोई तो गुण होता ही होता है। ऐसा नहीं होता है कि एक में सब गुणों का भंडार होता है, एक के अंदर सब अवगुणों का भंडार होता है। जो गुणवान दिखता है, उसमें भी कुछ अवगुण होते हैं और जो अवगुण वाला व्यक्ति दिखता है, उसके अंदर भी कुछ गुण दिखते हैं। टीचर्स का काम होता है, उसकी अच्छाईयों को समझना। उसको तराशना। उसके जीवन को, जो भी हैं उसको आगे ले जाने का अवसर देना। अगर टीचर ये कहे कि ये चार यार बड़े ब्रिलियेंट हैं, उस पर ध्यान दें, वे आगे निकल जाएंगे। मेरा नाम हो जाएगा। ये छोड़ो यार, ये तो बेकार है। उसके मां बाप देख लेंगे। टीचर ऐसा नहीं कर सकता है जैसे मां अपने घर में 3 बच्चे हों, कम-अधिक ताकत वाले बच्चे हों, लेकिन मां के लिए तीनों बच्चे बराबर होते हैं, टीचर के लिए भी कोई आगे, कोई पीछे, कोई ऊपर, कोई नीचे नहीं होता। सबके सब अपने होते हैं। हरेक के गुणों को जानना चाहिए और जब 30 स्टूडेंट के क्लास को टीचर पढ़ाता है तब 30 के bulk को नहीं पढ़ाता है। उसको address उन तीसों को individually करना होता है। बताते समय भी उसको ध्यान में रखता है। कि एक वाक्य उस बालक के लिए बोलेगा, जिसको समझने में देर लगती है। एक वाक्य उसके लिए भी बोलेगा, जो तेज-तर्रार समझ लेता है। अल्टीमेटली, सबको समान रूप से परोसने की कोशिश करेगा और इसलिए तिरुवनंतपुरम से जो सवाल पूछा गया, अगर मैं टीचर होता

तो कोई डिस्क्रिमिनेशन के पक्ष का नहीं होता। कोई प्यारा, कोई कम प्यारा, ऐसा नहीं हो सकता। सब के सब अपने होने चाहिए।

प्रश्न:9 : आपके विद्यार्थी काल में आप और आपके दोस्तों ने स्कूल में जो शरारतें की थी, क्या सर आपको वो याद है? और उन शरारत भरी यादों में से आप हमारे साथ कुछ बांटना चाहेंगे?

प्रधानमंत्री जी : मैं अभी लेह आया था, मालूम है? आप लोग थे? मैंने लेह में क्या बताया था, याद है? मैं पहले बहुत आता था, लेह और जब लेह आता था, तो ये दिल्ली के हमारे जो साथी थे, कहते थे, मोदी जी लेह जा रहे हो। तो आते समय वहां से गोभी, आलू जरूर ले आना। मालूम है ना, लेह में आर्गेनिक फार्मिंग के कारण बहुत अच्छी गोभी और आलू मिल जाते हैं। मैं काफी ढेर सारा, वापस आते समय ले आता था, वहां जब काम करता था।

बड़ा Interesting सवाल पूछा है। उन्होंने पूछा है कि मैं जब आपकी तरह बालक था तो मैं भी शरारत करता था क्या? कोई बालक हो सकता है क्या ऐसा जो शरारत न करता हो, हो सकता है क्या? हो ही नहीं सकता। अगर बालक मन और कभी-कभी तो मुझे ही चिंता होती है, कि बचपन बहुत तेजी से मर रहा है। यह बहुत चिंता का विषय है। समय से पहले वह कुछ अलग ही सोचने लग जाता है, उसका बालक अवस्था जो है, वह दीर्घकालीन रहनी चाहिए, वह शरारतें होनी चाहिए, वह मस्ती होनी चाहिए। यह जीवन विकास के लिए बहुत जरूरी होती है।

मैं भी शरारत करता था। मैं एक बता दूं कैसे? आप जानते होंगे, वो बजाते हैं शहनाई। शादी जहां होती है ना, तो बाहर शहनाई बजाने वाले बैठते हैं, शादी जब होती है तो किसी के यहां जब शादी होती है और शहनाई वाले बजाते हैं, तो हम 2-3 दोस्त थोड़े शरारती थे। तो हम क्या करते थे, वो शहनाई बजाता है तो हम इमली ले के वहां जाते थे और जब बजाते थे तो इमली दिखाते थे। पता है इमली दिखाने से क्या होता है, मुंह में पानी आता है ना। तो बजा नहीं पाता था। तो हमें वो मारने के लिए दौड़ता था। लेकिन आप यह नहीं करोगे ना। डू यू फॉलो, व्हाट आई सेड, एवाइड शहनाई प्ले। डू यू फॉलो, व्हाट आई एम टॉकिंग टू?

एक जरा, और थोड़ी, थोड़ी जरा अच्छी नई लगने वाली बात बता दूं। बताऊं? लेकिन आप प्रोमिस कीजिए, आप नहीं करेंगे। पक्का? पक्का? हम किसी की शादी होती थी तो चले जाते थे। और लोग शादी में खड़े होते हैं। खड़े होते हैं तो, कोई भी दो लोग खड़े हैं, कोई लेडीज, कोई जेंट्स, तो उनके पीछे कपड़े पकड़ के स्टेपलर लगा देते थे। फिर भाग जाते थे। आप कल्पना कर सकते हो, फिर क्या होता होगा वहां। लेकिन आपने मुझे प्रोमिस किया है। आप लोग कोई करेंगे नहीं ऐसा। प्रोमिस? लेह, लेह वाले बताइए, प्रोमिस?

प्रश्न:10 : सर, मैं यह जानना चाहती हूं कि हमारे बस्तर इलाके में बस्तर जैसे जनजातीय इलाकों में खासकर लड़कियों के उच्च शिक्षा संस्थानों की बहुत कमी है। तो इसके लिए आप क्या उपाय करना चाहेंगे?

प्रधानमंत्री जी : मैं बस्तर के इलाके में बहुत दौरा मैंने किया हुआ है। दन्तेवाड़ा पर भी मैं आया हूं। मैं छत्तीसगढ़ के आपके मुख्यमंत्री को इस बात के लिए बधाई देता हूं कि उन्होंने बस्तर में शिक्षा के लिए बहुत नए इनिशिएटिव लिए हैं। इन दिनों तो कुछ मौलिक चीजें जो दन्तेवाड़ा में ही हुई हैं। मैं मानता हूं देश के शिक्षाविदों का ध्यान डॉ. रमन सिंह ने जो काम किया है उसे याद किया ।

ये बात सही है कि बालिकाओं की शिक्षा को बहुत प्राथमिकता देनी चाहिए अगर देश को आगे बढ़ाना है। महात्मा गांधी कहते थे कि बालक अगर पढ़ता है तो एक व्यक्ति पढ़ता है लेकिन एक बालिका अगर पढ़ती है तो दो परिवार पढ़ते हैं। मायके वाले और ससुराल वाले। दो परिवार पढ़ते हैं और इसीलिए इन दिनों हम देखते हैं हिन्दुस्तान में कहीं पर भी आप देखिए अभी गेम्स हो गई उस गेम्स में आपने देखा होगा करीब-करीब 50 प्रतिशत मेडल जीतने वाली बालिकाएं थी। एजुकेशन में देखिए फर्स्ट 10 टॉपर देखिए हर स्टेट में 6-7 तो लड़कियां ही होती हैं। लड़के बहुत पीछे रह गये हैं। देश के विकास में इतनी बड़ी ताकत, 50 प्रतिशत, इसकी अगर शिक्षा-दीक्षा होती तो बहुत लाभ होने वाला है।

इसीलिए मेरा भी बड़ा आग्रह रहता है कि गर्ल चाइल्ड एजुकेशन पर बल दिया जाए। और आज जो हम ये जो गर्ल चाइल्ड के लिए टॉयलेट बनाने के पीछे मैं लगा हूं क्यों? मेरे ध्यान में ऐसा आया था कि बालिका स्कूल जाती है। तीसरी-चौथी कक्षा में आते ही स्कूल छोड़ देती है तो ध्यान में आता था कि बेटियों के लिए अलग टॉयलेट ना होने के कारण उसको वहां कन्फर्ट नहीं रहता था, उसके कारण पढ़ना छोड़ देती थी। इतनी छोटी सी चीज़ है। अगर किसी ने पहले ध्यान दिया होता

तो स्थिति और होती। इन्हीं कारणों से मैं इन दिनों आग्रह पूर्वक लगा हूँ मैं हिन्दुस्तान में हमारी सभी स्कूलों में बालकों के लिए बालिकाओं के लिए टॉयलेट बनें। बच्चियां स्कूल तो दाखिल हो रही हैं, हर मां-बाप को लगता है कि बेटी को स्कूल दाखिल करें। लेकिन कभी तीसरी कक्षा तक कभी पांचवी कक्षा तक, ज्यादा से ज्यादा सातवीं कक्षा तक, ज्यादातर बच्चियां स्कूल छोड़ देती हैं, बच्चियां स्कूल छोड़े नहीं उनको आगे की शिक्षा कैसे मिले, इस पर मेरा ध्यान है और मैंने इस दिशा पर काफी कुछ सोचा है। अभी मैं कर भी रहा हूँ। और उसके नतीजे नज़र आयेंगे। लेकिन मुझे खुशी हुई कि बस्तर जिले में आप लोगों को इतना चिंता इतना लगाव है और एक बालिका के मन में ऐसा सवाल आता है तो बहुत आनंद होता है। तो बालिकाओं की शिक्षा एक की चिंता एक बालिका कर रही है। वो भी दूर सुदूर बस्तर के जंगलों में से जहां माओवाद के कारण लहू लुहान धरती हो चुकी है। मैं मानता हूँ कि देश को जगाने की ताकत है इस सवाल में।

प्रश्न:11 : हम बच्चे देश की विकास एवं उन्नति है, आपकी क्या मदद कर सकते हैं?

प्रधानमंत्री जी : देखिए, एक तो खुद अच्छे विद्यार्थी बनें। यह भी देश की बहुत बड़ी सेवा है। हम एक अच्छे विद्यार्थी बनें। हम सफाई के संबंध में कोई कॉम्प्रमाइज न करें। आपमें से कई एक बच्चों से मैं अगर पूछूँ, स्कूल से जाते ही अपना जो स्कूल बैग है, ऐसे ही जाकर फेंक देते हैं, ऐसे कितने बच्चे हैं, सच बताइए ? ये आप देखिए, कोई फोटो नहीं निकालेगा, बता दीजिए। फिर मम्मी क्या करती है, उठाएगी, बैग रखेगी और कुछ बालक होंगे, घर में कितने भी मेहमान बैठे होंगे, बहुत कुछ चलता होगा, लेकिन किसी पर ध्यान नहीं। सीधे अपने, जहां स्कूल बैग रखते हैं, वहां जाएंगे। स्कूल बैग ठीक से रखेंगे। जूते ठीक से निकालेंगे। फिर आके सबको नमस्ते करेंगे। दो प्रकार के बालक होते हैं, अब आप को तय करना है कि अगर आप ढंग से जीते हैं तो आप देश सेवा करते हैं कि नहीं करते हैं।

कुछ लोगों को लगता है, देश के लिए मरना। या देश सेवा मतलब सिर्फ राजनेता बनना। ऐसा नहीं है। हम, मानो बिजली बचाओ, बिजली बचाने का विषय, आप अगर घर में तय करो, और मैं ये सब बच्चों से कहता हूँ कि आप इस बार तय कर लें, आप घर जाकर पूछिये, आपने मम्मी-पापा को, कि अपने घर में बिजली बिल कितना आता है। अभी तक आपने नहीं पूछा होगा। बालक क्या करता है, मुझे ये चाहिए। कैंपास चाहिए। टीचर ने ये मांगा है। उतना ही उसका घर के साथ संबंध, पैसों के संबंध में आता है। मुझे आज दोस्तों के साथ यहां जाना है। इतना पैसा दे दो।

कभी घर के कारोबार में आपने इंटरैस्ट लिया क्या? एक काम कीजिए आप, घर में मम्मी-पापा सब जब खाना खाने बैठे तो पूछिए आप, अपने घर का बिजली का बिल कितना आता है? पूछिए उनको। फिर उनको कहिये। अगर 100 रुपये बिल आता है, अगर 90 रुपये आए, हम ऐसा कर सकते हैं क्या? 50 रुपये का बिल आता है, 45 रुपये हो जाए बिल ऐसा कर सकते हैं क्या? कैसे कर सकते हैं, चर्चा करो घर में। बिजली कम उपयोग में हो, बिजली बर्बाद न हो, ये कर सकते हैं। आप अगर अपने घर में बिजली बचाते हो तो आपके घर में तो लाभ होगा ही होगा, लेकिन किसी गरीब के घर में बिजली का दीया जलेगा। यह बहुत बड़ी देश सेवा है, और एक पौधा लगाकर के जो हम पर्यावरण की रक्षा करते हैं, वैसे ही अपना परिवार बिजली बचाकर के, पर्यावरण की रक्षा कर सकता है और इसलिए देश सेवा करने के लिए समाज सेवा करने के लिए कोई बहुत बड़ी-बड़ी चीजें करनी नहीं होती हैं। छोटी-छोटी चीजों में देशभक्ति का प्रगटिकरण होता है और उन छोटी-छोटी चीजों पर हम ध्यान केन्द्रित करें, तो उससे बड़ी देश सेवा क्या होती है? वही बहुत बड़ी देश सेवा है।

प्रश्न:12 : Sir, my Question to you is that being in Assam we are very Concern about climate Change and its consequences. Sir how can you help and guide us to protect our pristine environment.

प्रधानमंत्री जी : देखिए आज छोटे-छोटे बालक भी क्लाइमेट चेंज और एन्वायरमेन्ट चेंज की चर्चा कर रहे हैं। अब मेरे मन में एक सवाल है कि सचमुच में क्या चेंज हुआ है। हम अपने आप से पूछें आपने देखा होगा कि हमारे गांव में जो बड़ी आयु के लोग होते हैं ना 70-80-85-90 के लोग सार्दियों में आप देखेंगे तो वह कहें हैं कि पिछली बार से इस बार सर्दी ज्यादा है। एकचूली सर्दी ज्यादा नहीं है उनकी उम्र बढ़ने के कारण उनकी सहने की शक्ति कम हो गई है। इसीलिए उनको सर्दी ज्यादा महसूस होती है, तो परिवार के जो बुजुर्ग लोग होते हैं वे कहते हैं कि पिछली इतनी सर्दी नहीं थी इस बार सर्दी ज्यादा हो गई है। वैसे ही ये क्लाइमेट चेंज नहीं हुआ है, हम चेंज हो गये हैं, हम बदल गये हैं, हमारी आदतें बदल गई हैं, हमारी आदतें बिगड़ गई हैं और उसके कारण पूरे पर्यावरण का हमने नुकसान किया है।

अगर हम बदल जाएं तो वह तो बदलने के लिए तैयार ही है। ईश्वर में ऐसी व्यवस्था रखी है कि संतुलन तुरन्त हो जाता है लेकिन उसकी पहली शर्त है कि मनुष्य प्रकृति से संघर्ष नहीं करें मनुष्य प्रकृति से प्रेम करें, पानी हो, वायु हो, पौधे हों।

हरेक के साथ इसीलिए हमारे शस्त्रों में तो पौधे को परमात्मा कहा गया, नदी को माता कहा गया, लेकिन जब से हम यह भूल गये, गंगा भी मैली हो गई। प्रकृति के प्रति और हमारा देश कैसा है। देखिए, हम पूरे ब्रह्माण्ड को अपना परिवार मानते हैं और ये हमें बचपन से सिखाया जाता है। बहुत से परिवार ऐसे होंगे जहां बच्चों को सिखाया जाता है कि जब बिस्तर से नीचे उतरोगे तो पृथ्वी माता से माफी मांगें कि हे पृथ्वी मां ! मैं पैर रखता हूं कि आपको दर्द होता होगा। वहीं से संस्कार शुरू होते हैं कि नहीं।

हम बालक होते हैं तो हमारी मम्मी हमें क्या कहती है कि ये चंदा है ना ये तेरा मामा है ये सूरज तेरा दादा है। ये चीजें हमें सहज रूप से ये पर्यावरण की शिक्षा देने के लिये, हमारे सहज जीवन में थी। लेकिन पता नहीं इतना बदलाव आया कि सब बुरा है, बुरा है, इतना मार-ठोक कर हमारे दिमाग में भर दिया गया है। और उसके कारण हमारी यह हालत हो गई है।

मुझे अभी नागपुर के मेयर मिले थे मैं पिछले दिनों नागपुर गया था। तो नागपुर के मेयर ने मुझे बहुत बढ़िया बात बताई। उन्होंने कहा कि वो पूर्णिया की रात को स्ट्रीट लाइट बंद कर देते हैं। स्ट्रीट लाइट करते हैं और शुरू में हमने प्रोवोक किया 2-3 घंटे लाइट बंद करने का। तो पहली बार घोषणा की, चांदनी रात है सब लोग बाहर आइये। तो 2-3 घंटे तक मेले जैसा माहौल रहा लोगों ने अपने घरों में भी बिजली बंद रखी, चांदनी का आनंद लेने के लिए।

आपमें से बहुत बच्चे ऐसे होंगे जिन्होंने मैं अगर पूछू कि आपमें से कितने हैं जिन्होंने सूर्योदय देखा है ? सचमुच में सूर्योदय देखा है, ऐसा नहीं कि उजाला था बस उजाला देखा। कितने हैं जिन्होंने सूर्यास्त देखा है ? कितने हैं जिन्होंने चांदनी रात को भरपूर चांद देखा है ? देखिए, आदतें हमारी चली गई हैं। हम प्रकृति के जीना भूल चुके हैं और इसीलिए प्रकृति के साथ जीना सीखना पड़ेगा और वो मुझे बता रहे थे मेयर कि नागपुर में हमारा बिजली का खर्च कम हुआ है। दो या तीन शायद हो चुका था तब तक। और लोगों को मजा आने लगा है और दो-तीन घंटे लोग बाहर निकलते हैं। तो मैंने एक सुझाव दिया कि ऐसा एक काम करो कि चांदनी रात में एक स्पर्धा करो कि चांदनी रात में सूई में धागा पिरोना, चांदनी रात सबको मजा आयेगा। अबाल गुरुत्त सब खेलेंगे, जिसका धागा जाएगा पता लगेगा उसकी आई साइट कैसी है। चांदनी रात का मजा लेंगे। आप लोग करेंगे। पक्का करेंगे करने के बाद मुझे चिट्ठी लिखेंगे। मैं विश्वास करूं सारे देश के बच्चों से विश्वास करूं। आप मुझे बताइये कि चांदनी रात को भी अगर दो-तीन घंटे बिजली रोकी, स्ट्रीट लाइट रोकी, तो पर्यावरण की सेवा होगी कि नहीं ? होगी चांदनी का मजा आयेगा कि नहीं आयेगा ? पर्यावरण से प्यार बढ़ेगा कि नहीं बढ़ेगा ? प्रकृति से प्रेम होगा कि नहीं होगा तो वही तो करना चाहिए, सहज रूप से किया जा सकता है तो बहुत बड़ी- बड़ी चीजें ना करते हुए भी हम इन चीजों को कर सकते हैं।

प्रश्न:13 : Sir, is Politics a difficult profession in your opinion and how do you handle stress and work pressure so well ?

प्रधानमंत्री जी :पहले तो पोलिटिक्स को प्रोफेशन नहीं मानना चाहिए इसे एक सेवा के रूप में स्वीकार करना चाहिए और सेवा का भाव तब जगता है जब अपनापन होता है। अपनापन नहीं होता है, तो सेवा का भाव नहीं होता है।

एक पुरानी घटना है एक 5 साल की बालिका अपने 3 साल के भाई को उठा के, बड़ी मुश्किल से उठा पा रही थी लेकिन उठाकर के एक छोटी सी पहाड़ी चढ़ रही थी तो एक महात्मा ने पूछा बेटी तुझे थकान नहीं लग रही ? उसने क्या जवाब दिया, नहीं मेरा भाई है। महात्मा ने फिर पूछा, मैंने यह नहीं पूछा कौन है, मैं कह रहा हूं कि तुम्हें थकान नहीं लग रही। उसने कहा अरे मेरा भाई है। महात्मा ने कहा फिर कहा कि मैं तुमसे यह नहीं पूछ रहा हूं कौन है ? मैं तुमसे पूछ रहा हूं कि तुम्हें थकान नहीं लगती है? तीसरी उसने कहा, अरे मेरा भाई है। महात्मा ने कहा अरे मैं सवाल पूछता हूं तुम्हें थकान नहीं लगती ? उसने कहा कि मैं आपका सवाल समझती हूं मेरा भाई है इसीलिए मुझे थकान नहीं लगती है। पांच साल की बच्ची। जब मुझे लगता है कि सवा सौ करोड़ देशवासी मेरा परिवार है तो फिर थकान नहीं लगती है। फिर काम करने की इच्छा मन में जगती है कि और कुछ करूं, और नया करूं, यही भाव मन में जगता है। इसीलिए पालिटिक्स को प्रोफेशन के रूप में नहीं, पालिटिक्स को एक सेवा धर्म के रूप में और वो सेवा धर्म अपनेपन के कारण पद के कारण नहीं पद तो आते हैं जाते हैं लोकतंत्र में एक व्यवस्था है। अपनापन, ये चिरंजीव होता है इसीलिए फिर न कोई श्लेष होता है ना थकान होती है। दूसरा शरीर की जो बायोलॉजी काम करती है वो तो आप जैसे बच्चों से गप्प मारते हैं तो ठीक हो जाता है।

प्रश्न:14 : जब आप गुजरात के मुख्यमंत्री थे तो गुजरात पढ़ो, यानी कि 'वांचे गुजरात' नाम से एक अभियान शुरू किया गया था। मैं आपसे यह जानना चाहूंगा कि क्या राष्ट्रीय स्तर पर कोई ऐसा अभियान शुरू करने के बारे में आपने विचार किया है?

प्रधानमंत्री जी :ऐसा तो विचार नहीं किया है, लेकिन एक और बात मेरे मन में चल रही है, वो है डिजिटल इंडिया। जब मैं डिजिटल इंडिया की बात कर रहा हूँ तो मेरा आग्रह है कि आधुनिक टेक्नोलॉजी मेरे छात्रों तक पहुंचे और सभी भाषाओं में पहुंचे और इस टेक्नोलॉजी के माध्यम से, इंफोर्मेशन कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी का लाभ लेते हुए, इंटरनेट का लाभ लेते हुए, ब्राडबैंड कनेक्टिविटी का लाभ लेते हुए, उनको आदत लगे, नई-नई चीजें खोजने की, देखने की, पढ़ने की, समझने की। अगर ये उसका आदत बन जाती है तो मैं समझता हूँ कि शायद ये मेरा जो डिजिटल इंडिया का जो मेरा सपना है पूरा हो जायेगा।

काम सारे में हाथ में ऐसे ले रहा हूँ, जो कठिन हैं। लेकिन कठिन काम हाथ में नहीं लूंगा तो कौन लेगा, यदि मैं नहीं लूंगा तो कौन लेगा? मैं ले रहा हूँ।

दूसरा, ये जो मेरा आज का कार्यक्रम है, उससे मैं एक प्रकार से मैपिंग कर रहा हूँ, इंडक्टीवली कि सचमुच में हमारे देश में इतने सालों से चर्चा चल रही है, 21वीं सदी की सुन रहे हैं, कंप्यूटर सुन रहे हैं, क्या कुछ नहीं सुन रहे हैं। मैं देखना चाहता हूँ सचमुच में हिंदुस्तान की कितनी स्कूलें हैं, जहां सचमुच में मेरा ईमेल पहुंचता। कितनी स्कूलें हैं, जहां पर इंटरनेट टेक्नोलॉजी से मैं बालकों तक पहुंच पाता हूँ, तो मेरा ये एक प्रकार का टेस्टिंग कार्यक्रम है। ये कार्यक्रम तो आपका है ही है, मेरी सरकार के लिए भी भीतर से एक कार्यक्रम चल रहा है। और इसलिए जो आपने कहा “पढ़े भारत, पढ़े भारत। लेकिन मैं ये चाहूंगा, कार्यक्रम मेरा हो न हो, सभी विद्यार्थी मित्रों को मेरा, शुरू में भी मैंने कहा था। कुछ भी पढ़ो, लेकिन पढ़ने की आदत होनी चाहिए। कुछ भी पढ़ो।

मैंने ऐसे लोग देखे हैं कि कहीं बाजार में पकौड़े खरीदा हो, और पकौड़े के लिए पैसे खर्च किये हों, लेकिन जिस कागज के टुकड़े में पकौड़ा बांधकर दिया है ना, उसको पढ़ने लग जाते हैं। क्योंकि उनके संस्कार हैं, पढ़ना ही उनकी आदत है। पकौड़े के टेस्ट के बजाय वह हाथ में अखबार का टुकड़ा आया है, उसको भी, पढ़ने का उसका मन कर जाता है। ऐसे लोग देखें होंगे आपने।

जरूरी नहीं, एक ही प्रकार का पढ़ो। आपको जो भी, आपको जो भी ठीक लगे। कॉमिक बुक्स हैं, कॉमिक बुक्स पढ़िये, आप। कोई बंदिश नहीं है, ये पढ़ो, वह पढ़ो। पढ़ने की आदत लग जाएगी। लेकिन अगर पढ़ने की सही दिशा की चीजें पढ़ने की आदत लग जाएगी। लेकिन अगर पढ़ने की आदत नहीं होगी, फिर आपके सामने कितनी भी बढ़िया से बढ़िया किताबें रही होंगी, फिर कभी हाथ लगाने का मन नहीं करेगा। और मैं सच बताता हूँ। एक विशाल सागर है, ज्ञान का इतना विशाल सागर है और किताब जब पढ़ते हैं तो इतनी नई चीजें हाथ लगती हैं।

किसी ने अभी जो पूछा था ना कि सीएम और पीएम बनने में क्या फर्क है, आप में कोई नजर आता है? ये तो मुझे नजर नहीं आता, लेकिन एक मुझे जरूर नजर आता है। मैं जब सीएम नहीं था तब मुझे पढ़ने का मौका मिलता और मैं काफी पढ़ता था। मुझे मजा आता था। लेकिन बाद में वो छूट गया। और मुझे, मैं उसको, एक प्रकार का मेरा अपना व्यक्तिगत नुकसान भी देखता हूँ। अब फाईलें पढ़ता हूँ। लेकिन अब मैं आग्रह करूंगा कि पढ़ने का प्रयास कीजिए। लेकिन आप में से किसी को इंटरेस्ट हो।

तो गुजरात में जब मैं था, “बांचे गुजरात” जो अभियान किया था, यह सचमुच में उसको समझने जैसा है और उस समय स्थिति ये बनी थी कि लाइब्रेरियों में एक भी किताब मौजूद नहीं थी, पूरे राज्य में। वरना, कई लाइब्रेरियां ऐसी होंगी, जहां पर कपबोर्ड की दस-दस साल तक सफाई नहीं हुई होगी। लेकिन उस अभियान के कारण, और मैं देख रहा था कि लोग इंप्लुएंस के लिए चिट्ठी लेने जाते थे कि फलानी उस लाइब्रेरी में बोलो ना मुझे किताब दें, मुझे वो किताब चाहिए।

क्योंकि निश्चित समय कालखंड में कितनी ज्यादा किताबें पढ़ते हैं। कितनी स्पीड से पढ़ते हैं, इसकी भी एक स्पर्धा थी और बाद में उसका वाइवा लिया जाता था, उन बालकों से क्वेशन-आंसर किया जाता था, क्या किताब पढ़ी, कैसे पढ़ी? यह अभियान इतना ताकतवर था, पूरा समाज इससे जुड़ा रहा। कोई सरकार का यह कार्यक्रम नहीं रहा था, सरकार ने तो इनिशिएट किया था। पूरा समाज जुड़ा था। मैं खुद भी, “बांचे गुजरात” कार्यक्रम में, लाइब्रेरी चला गया था। वहां जाकर के पढ़ने के लिए बैठा था और हरेक के लिए कार्यक्रम बनाया था। एक माहौल बन गया था पढ़ने का।

मैं चाहता हूँ कि पढ़ने का एक सामूहिक माहौल बनना चाहिए। स्कूल में भी कभी बनाना चाहिए। अपने स्कूल में भी ये सप्ताह, चलो भाई, लाइब्रेरी की किताब ले जाओ, पूरा सप्ताह यही चलता है। नई-नई किताबें पढ़ो। ज्यादा पढ़ो, सात दिन के बाद जब पूरा हो जाएगा तो पूछेंगे कि इस किताब किसने पढ़ी? उसका वाइवा क्या था? तो ये अपने आप हर स्कूल अपना कार्यक्रम बना सकती है। लेकिन ये मैं, आपमें से किसी को इंटरेस्ट हो तो, गुजरात से शायद आपको जानकारी मिल

सकती है कि वह कार्यक्रम कैसा हुआ था, लाखों की तादाद में लोग इसमें लगे थे और करोड़ों-करोड़ों आवर्स पढ़ाई हुई थी। अपने आप में वो एक बहुत बड़ा अभियान था। लेकिन मैंने भारत-देशव्यापी कार्यक्रम के लिए तो सोचा नहीं है, लेकिन इस डिजिटल इंडिया के माध्यम से और शिक्षा क्षेत्र में टेक्नोलोजी अधिक आए, हमारे बालक नई-नई चीजें खोजने लगे, दुनिया को समझने लगे, ये मैं जरूर चाहता हूं। थैंक यू।

प्रश्न:15 : In your speeches you appeal to people to save electricity .In this regard what are your expectations from us .How can we help in this ?

प्रधानमंत्री जी : मैंने बताया, और भी बहुत कुछ कर सकते हैं आप। लेकिन अनुभव यह है कि मान लीजिए हम पंखा चालू किये और आपके कोई दोस्त आ गए, हम बाहर खड़े हो गए। भूल गए पंखा बंद करना। अब यह हम ठीक कर सकते हैं या नहीं कर सकते हैं। हम स्कूल से निकल रहे हैं। कोई स्टूडेंट तय करे कि आखिर में मैं निकलूंगा और मैं देखूंगा कि मेरे क्लास रूम में कोई पंखा, कोई लाइट, कुछ भी चालू है तो मैं बंद करूंगा। कभी कभी हम सुखी परिवार में खिड़की खोलकर सोने की आदत ही चली गई, क्योंकि ऐसी की आदत हो गई। क्या कभी कोशिश की है क्या? छोटी-छोटी बातें हैं, लेकिन अगर हम थोड़ा प्रयास करें, तो ये भी क्योंकि देखिये, आज इनर्जी का संकट पूरा विश्व का है, कोयला गैस, पेट्रोलियम, इन सबकी सीमा है। तो बिजली उत्पादन कहां से होगी। तो कभी न कभी तो बिजली बचाने की दिशा में हमें जाना ही पड़ेगा। बिजली बचेगी तो जिन तक बिजली पहुंची नहीं है, उसे पहुंचाने में कम से कम खर्च से करने वाला काम है।

बिजली का उत्पादन बहुत महंगा है, लेकिन बिजली बचाना बहुत सस्ता है। उसी प्रकार से इन दिनों सारे बल्ब, टेक्नोलोजी इनर्जी सेविंग वाली आ रही है। पहले आपके घर के ट्यूबलाइट में जितनी इनर्जी का कंजप्शन होता था, अब नए प्रकार की ट्यूब्स आई है। आपका इनर्जी सेविंग हो रहा है। पैसे भी बच जाते हैं। और इसलिए ऐसे अपने परिवार में भी बात करनी चाहिए। और सिर्फ बिजली क्यों, पानी भी। हम ब्रश करते हैं, और नल के से पानी चला जा रहा है। नल बंद करके भी तो ब्रश किया जा सकता है। फिर जरूरत पड़े, लेकिन हम पानी, हमें ध्यान ही नहीं होता है कि इन चीजों को कर रहा हूं, इससे नुकसान हो रहा है। क्योंकि हम उन चीजों को भूल गए हैं। फिर एक बार सारे शिक्षक अगर स्कूल में याद करायेंगे। सब परिवार में माहौल बनेगा। और हम सब एक दायित्व लेकर के काम करेंगे तो यह काम होगा। ये ऐसा नहीं है कि कोई प्रधानमंत्री है कर लेंगे तो जाएगा। प्रधानमंत्री अपने घर में कितनी बिजली बचाएगा? लेकिन देश, सब मिलकर के करते हैं तो बूंद-बूंद से सागर बन जाता है। वैसे ही बन जाएगा।

प्रश्न:16 : Sir, we are very happy with the support for Girl education. Sir, can you tell us what for the steps you will in this matter?

प्रधानमंत्री जी : एक तो सबसे बड़ी जो चिंता का विषय है, 5वीं कक्षा के बाद बालिका को अपने गांव से दूसरे गांव जो पढ़ने के लिए जाना है, तो मां-बाप भेजते नहीं हैं। मां-बाप को लगता है कि नहीं-नहीं बच्ची है, नहीं जाएगी। अब वहीं से उसकी बेचारी की जिन्दगी को रूकावट हो जाती है और इसीलिए बालिका को अपने घर से निकट से निकट अधिकतम शिक्षा कैसे मिले। उसको शिक्षा छोड़नी ना पड़े। सिक्स, सेवन, सातवीं-आठवीं के बाद तो फिर संकट नहीं रहता है मां-बाप को भी विश्वास हो जाता है कि अब बेटी को भेज सकते हैं। तो इस दिशा में भी हम काम कर रहे हैं कि बालिका के लिए निकटतम स्कूल मिले। ये अगर हों गया तो उसको शिक्षा में सुविधा रहेगी।

दूसरा है क्वालिटी ऑफ एजुकेशन में हम टेक्नोलॉजी का भरपूर उपयोग करना चाहते हैं। आज दूर सुदूर गांव में अच्छा टीचर जाने को तैयार नहीं, शहर में रहना चाहता है, तो उपाय क्या ? तो लांग डिस्टेन्स टेक्नोलॉजीस से पढ़ाया जा सकता है। जैसे मैं अभी बच्चों से बातें कर रहा हूं, हिंदुस्तान के हर कोने से , कहीं तिरुपति से, कहीं पोर्टब्लेयर से, सब बच्चों से मैं बात कर रहा हूं। इसी तरह भविष्य में अच्छे टीचर द्वारा पढ़ाया भी जा सकता। एक टीचर सेंटर स्टेज पर से एक साथ लाखों क्लासरूम को अच्छी चीज़ पढ़ा सकता है और बच्चों में ग्रास्पिंग बहुत होता है और वो तुरंत इसको पकड़ लेते हैं। ये अगर हम कर पाये तो बच्चियों को अच्छी शिक्षा देने में भी हमें सफलता मिलेगी।

प्रश्न:17 : सर, हमारे देश में रोजगार की समस्या बनी हुई है। क्या आप स्कूल में रोजगारपरक शिक्षा यानि स्किल डेवलपमेंट को बढ़ावा देने का सोच रहे हैं?

प्रधानमंत्री जी : सारी दुनिया में, दुनिया में सब समृद्ध से समृद्ध देश भी एक बात पर बल दे रहे हैं स्किल डेवलपमेंट एक

घटना सुनाता हूँ मैं। उससे आपको ध्यान में आयेगा कि स्किल डेवलपमेंट का कितना महत्व है। आप लोगों ने आचार्य विनोबा भावे का नाम सुना होगा, महात्मा गांधी के चिन्तन पर उन्होंने देश की बहुत सेवा की। उनके एक साथी थे दादा धर्माधिकारी और वो भी बड़े चिन्तक थे और दादा धर्माधिकारी की छोटी-छोटी घटनाओं की किताबें हैं पढ़ने जैसी किताबें।

दादा धर्माधिकारी ने एक प्रसंग लिखा है बड़ा इंटरस्टिंग प्रसंग है। कोई एक नौजवान उनको मिलने गया कि दादा मेरी लिए नौकरी का कुछ कीजिये, किसी को बता दीजिए तो। उन्होंने पूछा कि तुम्हें क्या आता है। तो उसने कहा कि मैं एम. ए. हूँ। उन्होंने कहा कि भाई वो तो बराबर है, तुम एम. ए. हो वो तो तुम्हारी डिग्री है तुम्हें आता क्या है? उन्होंने फिर कहा, तुम्हें क्या है? उसने कहा नहीं-नहीं वो तो ठीक है तुम्हें आता क्या? उसने कहा नहीं-नहीं मैं एम. ए. पास हूँ ना? लेकिन तुम ये तो बताओ तुम्हें आता क्या है। फिर उन्होंने उसको आगे बढ़ाया अच्छा ये तो बताओ, उस समय टाइप राइटर था, कि तुम्हें टाइप करना आता है, बोला नहीं आता है, ड्राइविंग करना आता है, बोले नहीं आता है, खाना पकाना आता है, तो बोले वो भी नहीं आता, तो बोले कमरा बगैरह साफ करना आता है तो बोले वो भी नहीं है। तो बोले तुम एम. ए. हो तो करोगे क्या? ये दादा धर्माधिकारी ने अपना एक संवाद लिखा है।

कहने का मतलब ये है कि हमारे पास डिग्री हो उसके साथ हाथ में हुनर होना बहुत जरूरी है। और हर बालक, के व्यक्तित्व के साथ उसको स्किल डेवलपमेंट का अवसर मिलना चाहिए। हमारे देश में सब बच्चे कोई हायर एजुकेशन में नहीं जाते सातवीं में बहुत सारे बच्चे सकूल छोड़ देते हैं दसवीं आते-आते ओर छोड़ देते हैं। कॉलेज और यूनिवर्सिटी में जाने वाले तो बहुत बच्चे होते हैं एक गांव में से मुश्किल से एक या दो बच्चे जाते हैं। उनके लिए आवश्यक है स्किल डेवलपमेंट। अच्छा दूसरी तरफ क्या है एक तरफ नौजवान है और बेचारा रोजगार नहीं और दूसरी तरफ आपके घर में नलके में गड़बड़ है और आपको प्लम्बर चाहिए प्लम्बर मिलता नहीं, ड्राइवर मिलता नहीं क्यों? लोग हैं। लेकिन जैसे तैयार करना चाहिए ऐसे तैयार किए नहीं। अगर हम अच्छे ड्राइवर तैयार करें हमें अच्छे ड्राइवर मिलेंगे, अच्छे कुक तैयार करें लोगों को अच्छे कुक मिलेंगे। हम अच्छा गुलदस्ता बनाने वाले तैयार करेंगे तो गुलदस्ता बनाने वालों की संख्या बढ़ेगी। स्किल डेवलपमेंट विकास के लिए किसी भी नौजवान को रोजगार के लिए किसी भी देश के लिए बहुत आवश्यक है।

दूसरा स्किल डेवलपमेंट नॉट नेसेसरी की इसी लेवल का हो। रिकवायरमेंट के अनुसार हो सकता है। जिस क्षेत्र में औद्योगिक विकास होता है तो जिस प्रकार के लोगों की जरूरत पड़ती है। अब जैसे मैं गुजरात में था तो नैनो कार वहां बनाना शुरू हुई तो मैंने उनसे कहा किये अगल-बगल के जो आइटीआई हैं उसमें आप अपना ऑटोमोबाइल का सिलेबस शुरू करें, नैनो वाले ही करें और वहां के बच्चों को आप ऑटोमोबाइल की आईटीआई ट्रेनिंग दीजिए। साल भर में आप की कंपनी खड़ी हो जाएगी साल भर बच्चों की ट्रेनिंग हो जायेगी। तो उन्होंने 15-20 किलो मीटर की रेंज में जितने आईटीआई ये उन्हें ले लिया। उधर कंपनी तैयार हो गई उधर बच्चे तैयार हो गये उनको या नौकरी मिल गई। तो जहां जिस प्रकार का काम उसको मेपिंग करना चाहिए। मेपिंग करके उस प्रकार, कहीं केमिकल इन्डस्ट्रीज़ है तो उसके अगल बगल के गांवों के बच्चों को वो ट्रेनिंग देनी चाहिए कहीं सेरमिक का इन्डस्ट्री है तो वहां के अगल बगल के बच्चों को नजदीक में ही काम मिल जाएगा। अगर ये हम करते हैं तो आर्थिक विकास में एकदम जम्प लगेगा। हमारे देश में रोजगारी सबसे प्राथमिक बात है और रोजगारी के लिए डिग्री के साथ स्किल का भी उतना ही महत्व है। और ये अगर हम करने में सफल हुए तो और अगर आने वाले दिनों में हमने जो कार्यक्रम उठाए हैं उसी बात के लिए ये सरकार ने स्किल डेवलपमेंट का अलग मिन्स्ट्री बनायी है, अलग मंत्री बनाया है उसको लेकर हम फोकस एक्टिविटी कर रहे और जिसका परिणाम निकट भविष्य में देखने को मिलेगा।

धीरज सिंह/ अमित कुमार / महेश राठी/ शिशिर चौरसिया/ तारा /लक्ष्मी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

02-सितम्बर-2014 12:40 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा टोकियो के सैकरेड हार्ट विश्वविद्यालय में दिए गए व्याख्यान का मूल पाठ

सभी नौजवान साथियो,

आपको आश्चर्य होता होगा कि किसी देश के प्रधानमंत्री ने आपके कॉलेज में आना क्यों पसंद किया, स्टूडेंट्स को मिलना क्यों पसंद किया। मेरी यह कोशिश है कि अगर दुनिया में भिन्न-भिन्न समाजों को समझना है, तो दो क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। एक, वहां की शिक्षा प्रणाली और दूसरी, वहां के आर्ट एंड कल्चर। यह दो महत्वपूर्ण पहलू होते हैं, जिससे इतिहास भी समझ में आ जाता है और उस देश की प्रकृति भी समझ में आ जाती है और एक मोटा-मोटा अंदाज लगा सकते हैं कि वो कौन सी बातें हैं जिसके साथ हम बड़ी निकटता से जुड़ सकते हैं। मैंने सुना है कि आपकी इस यूनिवर्सिटी का बड़ा नाम है। यहां के बड़े रहीस, यहां के विद्यार्थी रहे हैं और उसके कारण सहज रूप से जापान और जापान के बाहर आपकी इस यूनिवर्सिटी का काफी संपर्क रहा है। मैंने सुना है भारत के भी बहुत सारे विद्यार्थी कभी न कभी यहां स्टूडेंट के रूप में रहे हैं।

आपके मन में बहुत स्वाभाविक होगा कि भारत में महिलाओं की क्या स्थिति है, किस प्रकार का उनका जीवन है। शायद दुनिया में भारत ही एक ऐसा देश है, जहां के सामाजिक जीवन में जो भगवान की कल्पना की गई है। उस भगवान की कल्पना में विश्व में सभी जगह पे, सभी समाजों में ज्यादातर पुरुष भगवान की ही कल्पना की गई है। एकमात्र भारत ऐसा देश है, जहां 'स्त्री भगवान' की कल्पना की गई है। 'गॉडैस' का कंसेप्ट है वहां। आज जो मिनिस्ट्री का फोरमेशन जो होता है, उसके संदर्भ में हमारी जो पुरानी मिथोलॉजी को सोचूं तो हमारे यहां पूरा एजुकेशन माता सरस्वती, गॉडैस सरस्वती से जुड़ा हुआ है। अगर पैसों की बात करें, धन की बात करें तो गॉडैस लक्ष्मी की कल्पना है। अगर आप सोचे कि सिक्युरिटी का मामला है होम अफेयर्स की एक्टिविटी है तो महाकाली की कल्पना है। अगर फूड सिक्युरिटी की सोंचे तो हमारे यहां देवी अन्नपूर्णा की कल्पना है। यानी पूरी मिनिस्ट्री महिलाओं के हाथ में थी। मेजर पोर्टफोलियो महिलाओं के हाथ में थे। यानी इस कल्पना से भारत की विशेषता रही है और आपने देखा होगा कि दुनिया में कई देश ऐसे हैं कि जहां आज भी चीफ ऑफ द स्टेट के रूप में महिलाओं को प्रधान्य नहीं है, लेकिन एशियन कंट्रीज में यह परंपरा रही है। चाहे हिन्दुस्तान देखिये, बंगला देश देखिये, श्रीलंका देखिये, पाकिस्तान देखिये, इंडोनेशिया देखिये इवन थाइलैंड देखिये कोई न कोई हैड ऑफ द कंट्री महिला रही हैं और यह वहां की विशेषता रही है।

लेकिन भारत जब गुलाम हुआ और जब अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान छोड़ा तो यह बड़ा दुर्भाग्य था हमारे देश का, सिर्फ 9 परसेंट विमेन एजुकेशन था। उसके बाद कई इनिशिएटिव लिए गए और व्यक्तिगत रूप से मैंने गर्ल चाइल्ड एजुकेशन को बहुत ही प्राथमिकता दी है। मैं भारत का प्रधानमंत्री बना, उससे पहले मैं भारत के वेस्टर्न पार्ट में एक छोटा सा स्टेट है गुजरात, मैं उस गुजरात का मुख्यमंत्री था। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में मैंने गर्ल चाइल्ड एजुकेशन पर एक बहुत बड़ा इनीशिएटिव लिया था। मैंने अपने आप को डेडिकेट किया था, गर्ल चाइल्ड एजुकेशन के लिए।

गर्ल चाइल्ड एजुकेशन के प्रति मेरा इतना लगाव है, मेरे मन में इतना भाव जगा है कि जैसे, हेड ऑफ द स्टेट कई सारे फंक्शन में जाते हैं तो बहुत सारे गिफ्ट मिलते हैं, नई-नई चीजें लोग देते हैं, हिन्दुस्तान में ऐसी परंपरा है। मैं सारी चीजें ट्रेजरी में जमा करता था। जमा करने के बाद उसकी ऑक्शन करता था। ऑक्शन से जो पैसा आता था, वह सारे पैसे मैं गर्ल चाइल्ड एजुकेशन के लिए डोनेट कर देता था।

मैं 14 साल मुख्यमंत्री रहा। 14 साल में जो चीजें मुझे मिली थी, जो छोटी-मोटी चीजें मिली थी, उसकी नीलामी की। जब मैंने गुजरात छोड़ा तो मैंने 78 करोड़ रुपये गुजरात सरकार की तिजोरी में जमा कराये थे, जो बच्चियों की शिक्षा के लिए खर्च किये जा रहे हैं।

भारत की एक और जानकारी भी शायद आपके लिए आश्चर्यजनक होगी, वहां के पोलिटिकल सिस्टम में एक लोकल सेल्फ गवर्नमेंट होती है, लोग अपना म्युनिसिपैलिटी का चुनाव करते हैं, पंचायत का चुनाव करते हैं, और उसका जो बॉडी बनता है वह पांच साल के लिए वहां का कारोबार चलाते हैं। आपको जानकर खुशी होगी कि वहां 33 प्रतिशत महिलाओं को आरक्षण

है। कोई भी इलेक्टेड बॉडी होगा, लोकल लेवल पर, जहां 33 प्रतिशत महिलाओं का रिप्रजेंटेशन जरूरी है। इतना ही नहीं, हर सेकेंड इयर के बाद, चीफ आफ दि यूनिट, वह भी महिला ही होती है। कभी मेयर महिला बनती हैं, कभी डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट महिला बनती हैं, कभी ब्लॉक प्रेसिडेंट महिला बनती हैं। इसलिए वहां डिजीजन मेकिंग प्रोसेस में महिलाओं को प्राथमिकता देने का एक संवैधानिक कानूनी प्रबंध किया गया है।

आपको जानकारी यह भी खुशी होगी कि अभी-अभी जो मेरी सरकार बनी है, 100 दिन हुए हैं सरकार को। मेरा जो कैबिनेट है, कैबिनेट में 25 प्रतिशत महिला हैं। इतना ही नहीं, हमारी जो विदेश मंत्री हैं, वह भी महिला ही हैं। तो आप कल्पना कर सकते हैं कि भारत में बहुत प्रयत्न पूर्वक इस 50 प्रतिशत पोपुलेशन को विकास की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी बनाने के लिए शैक्षणिक क्षेत्र से, राजनीतिक क्षेत्र से जीवन को आगे बढ़ाने का पूरा प्रयास किया है।

हमारे सामने एक बहुत बड़ी चुनौती यह है कि जितना हम शिक्षा प्राप्त करते हैं, साइंस, टेक्नोलोजी, कंप्यूटर वर्ल्ड, कभी-कभी डर रहता है कि आज भी इस व्यवस्था से हम रोबोट तो तैयार नहीं कर रहे हैं। मुझे खुशी है कि आपके इस विश्वविद्यालय में ह्यूमेनिटी पर जोर है। उसका प्राइमरी जो शिक्षा है, वह इन सब विषयों से जुड़ी हुई है। मैं मानता हूं कि ये ह्यूमेनिटी का जो कंसेप्ट है, तकनीक कितनी ही आगे क्यों ना बढ़े, कितने ही रोबोट क्यों न तैयार करें, पर मानवीय संवेदना के बिना जीवन असंभव है। और इसलिए मैं कभी-कभी कहता हूं, साइंस ऑफ थिंकिंग एंड आर्ट ऑफ लिविंग, ये दोनों का कॉम्बिनेशन चाहिए। मेरे लिए खुशी की बात है कि मुझे आज आप सबसे मिलने का मौका मिला।

आपमें से कितने लोग हैं जो कभी हिन्दुस्तान गए हैं ?

आपमें से कितने हैं, जिनकी हिन्दुस्तान जाने की इच्छा है ?

तो आप सब लोगों का हिन्दुस्तान में स्वागत है। जरूर आइए। भारत एक बहुत बड़ा, विशाल देश है, उसे देखिए। मैं इस विश्वविद्यालय के सभी महानुभावों का आभारी हूं कि आप सबके साथ बात करने का अवसर मिला। धन्यवाद।

अमित कुमार/ शिशिर चौरसिया/ तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

01-सितम्बर-2014 11:14 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा जापान में टोक्यो के ताइमेई एलिमेंट्री स्कूल की यात्रा के दौरान दिए गए भाषण का मूल पाठ

मैं आप सब बहुत आभारी हूँ कि आपने समय निकाला और जापान की मुख्य रूप से प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था को समझने का मुझे अवसर दिया। आज एक सितंबर है, मुझे बताया गया है, 1923 में एक सितंबर को अर्थकवेक के कारण यह स्कूल पूरी तरह से नष्ट हो गया था। मैं देख रहा हूँ कि उसका आपने कैसे फिर से पुनर्निर्माण किया है। मैं जानता हूँ कि अर्थकवेक में एक स्कूल का नष्ट होना कितना पीड़ादायक होता है।

जब 2001 में गुजरात में भयंकर भूकंप आया और अंजार में हमारे जो बच्चे थे, 26 जनवरी को हाथ में तिरंगा झंडा लेकर जा रहे थे, और 400 से ज्यादा बच्चों ने उस भूकंप में अपना जीवन खोया था। उन स्मृतियों को मुझे आज स्कूल की 1 सितंबर 1923 की घटना ने पुनः स्मरण दिला दिया। 136 इयर ओल्ड वो स्कूल है, और इसीलिए स्कूल की अपनी पुरानी परंपरा है। मैंने सुना है कि यहां के बहुत बड़े परिवार के बच्चों को भी इस स्कूल में शिक्षा-दीक्षा लेने का अवसर मिला है और इस प्रकार से इस स्कूल का जापान के सामाजिक जीवन में भी एक अच्छा स्थान रहा है।

स्कूल आने के मेरे इरादे के पीछे मेरे मन में, भारत का जो प्राइमरी एजुकेशन है उसमें हम आधुनिकता लाने के लिए, मोरल एजुकेशन लाने के लिए, डिस्सीप्लीन लाने के लिए, किन-किन प्रयोगों को कर सकते हैं, इसको मैं सीखना और समझना चाहता हूँ। इसलिए मैं भी आज आपके लिए इस 136 इयर ओल्ड स्कूल का एक ओल्ड स्टूडेंट बन के आया हूँ।

सारा विश्व इस बात को मानता है कि 21वीं सदी एशिया की सदी है। अब अगर 21वीं सदी एशिया की सदी है तो हम एशियन कंट्रीज में अपने आपको इतनी बड़ी जिम्मेवारी के लिए प्रिपेयर किया है क्या ? अगर हम प्रिपेयर करना चाहते हैं तो एक बात है कि हम एशियन कंट्रीज को अडोस-पडोस के देशों की भाषाओं को अच्छे ढंग से सीखना समझना होगा। उनके सोशल वैल्यूज को समझना होगा और तभी जाकर के 21वीं सदी एशिया की बने लेकिन वो पूरे मानव जाति के कल्याण काम आए। इसी के तहत हम भारत में स्कूलों में जापानी लैंग्वेज सिखाने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

हमारे यहां जो सीबीएसई स्कूल हैं उसमें अभी जापानी क्लासेसज शुरू की हैं। लेकिन हमें जापानी लैंग्वेज के टीचर्स की बहुत कमी पड़ रही है। तो मैं यहां के एजुकेशन डिपार्टमेंट को और शिक्षा क्षेत्र के सभी मित्रों को निमंत्रण देता हूँ कि आप भारत में जापानी लैंग्वेज सिखाने के लिए आइए। रिटायर्ड टीचर्स भी अगर भारत में जापानी लैंग्वेज सिखाने के लिए आना चाहते हैं तो उनका भी स्वागत है और यहां का एजुकेशन डिपार्टमेंट ऑनलाइन जापानी लैंग्वेज ऑडियो विजुअल के साथ रिटन टेस्ट के साथ अगर सिखाने का एक भारत और जापान मिलकर प्रोग्राम बनाते हैं , और उसका एक इग्जामिनेशन सिस्टम जापान में हो, तो मुझे विश्वास है कि भारत के बहुत बच्चे ऑनलाइन जापानी लैंग्वेज सीखने के लिए भी आगे आएंगे। आगे चलकर हम जापानी लैंग्वेज प्रमोशन और उसके लिए साइमलटेनिअस इंडियन लैंग्वेज भी यहां सीखी जाएगी। अगर ये यहां हम करते हैं तो '21फ़्ट सेंचुरी, एशिया की सेंचुरी' की जो बात है उसके लिए हम बहुत बड़ा बल नई पीढ़ी को तैयार करके दे सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि उस काम में हम लोग मिलकर करेंगे। जितनी पुरानी, प्रसिद्ध और सामाजिक जीवन प्रभाव पैदा करने वाली। स्कूल में भी जाने का अवसर मिला आप सबने समय दिया मेरा ज्ञानवर्धन किया, इसके लिए मैं जापान सरकार का, स्कूल मैनेजमेंट का एजुकेशन डिपार्टमेंट का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

अमित कुमार